परीक्षा

[सन् १९६४ की विक्रम नायर ट्राफी नाटक प्रतियोगितामें प्रथम पुरस्कृत मलयालम का बहुपठित समस्या नाटक]

मूल लेखक
टी०एन० गोपीनाथ नायर

रूपान्तरकार
सुधांशु चतुर्वेदी

प्रकाशक
तेजनारायण टंडन
हिन्दी-साहित्य-भंडार
५५, चौपटियाँ रोड, लखनऊ-३

प्रकाशक
तेजनारायण टंडन
हिंदी साहित्य भंडार
५५, चौपटियाँ रोड, लखनऊ—३

•

प्रथम संस्करण
२ अक्टूबर, १९६६
मूल्य १·५० पैसे

•

मुद्रक
रोहिताश्व प्रिंटर्स
ऐशबाग रोड, लखनऊ—४

भूमिका

'कला के लिए कला' वाले सिद्धांत का कितना भी प्रचार क्यों न किया जाय, भारतीय साहित्यकार कला को जीवन के लिए उपयोगी मानने के विश्वास से नहीं डिग सकता। इसी विश्वास के फलस्वरूप भारतीय साहित्य में आदर्श पात्रों को नायक पद पर प्रतिष्ठित करके रचनाएँ लिखी जाती हैं। मलयालम के प्रसिद्ध नाटककार श्री टी०एन० गोपीनाथन नायर के 'परीक्षा' नामक एकांकी में, जिसका हिंदी रूपान्तर श्री सुधांशु चतुर्वेदी ने किया है, एक ऐसे प्रधानाध्यापक की कहानी है जिसकी अन्तरात्मा उसे किसी भी प्रलोभन या किसी भी भय से आदर्श का परित्याग करने से रोकती है। मानवता के नाते अपने एक बाल सहचर के पुत्र को अपनी ही कलम से अनुत्तीर्ण करने का दुख तो उसे इतना है कि स्वयं रात भर सो नहीं पाता, परंतु अपनी सिद्धांत-प्रियता के कारण उसके साथ कुछ अंकों की रियायत करने में वह अंत तक अपने को असमर्थ पाता है। अपनी विवाहिता पुत्री के अधिकारी पति की भी ऐसी सिफारिश वह नहीं मानता यद्यपि वह जानता है कि वैसा न करने पर उसका दामाद उससे अप्रसन्न हो जायगा। नाटक की चरम सीमा तब आती है जब अपनी दूसरी अविवाहिता पुत्री के प्रेमी को भी वह इसी कारण रुष्ट कर देता है। सहज वात्सल्य से लालित पोषित पुत्री के आँसू माता के हृदय को तो विचलित कर देते हैं, परंतु सिद्धांतप्रिय पिता को डिगाने से असमर्थ रहते हैं।

पत्नी जब उसे यह कहकर धर्मसंकट में डालना चाहती है कि कहीं तुम्हारी इस सत्यवादिता के खीझकर भावी दामाद विवाह करना अस्वीकार न कर दे, उसका विश्वास भरा उत्तर है—"वैसा करना पड़ेगा तो भगवान की दया से उसके लिए दूसरा पति मिल जायगा।" अंत में उस न्यायप्रिय प्रधानाध्यापक के सामने सबको झुकना पड़ता है और नाटक की सुखद समाप्ति होती है।

कथा-संगठन, घटना-संयोजन, संवाद-योजना, चरित्र-चित्रण, युग-दर्शन आदि सभी दृष्टियों से पाँच दृश्यों का यह एकांकी सफल है और एक अहिंदी-भाषी लेखक की राष्ट्रभाषा को महत्वपूर्ण सामयिक देन है। इसका अभिनय प्रभावशाली ढंग से हो सकता है। भाषा में अवश्य 'हिंदीपन' का अभाव है और कहीं-कहीं वाक्य-विन्यास भी खटकता है।

राष्ट्रभाषा में सहयोगी भाषाओं की ऐसी सुन्दर कृतियों का सर्वत्र स्वागत होगा, ऐसा हमारा विश्वास है।

हिंदी विभाग,
विश्वविद्यालय, लखनऊ
९—१२—६६

—प्रेमनारायण टंडन

पात्र–परिचय

जनार्दन पिल्ला	—	लगभग ६० वर्ष का अवकाशप्राप्त प्रधान ध्यापक।
भागीरथी अम्मा	—	जनार्दन पिल्ला की पत्नी।
सरस्वती	—	बड़ी पुत्री। एक तहसीलदार की पत्नी।
यमुना	—	दूसरी पुत्री। उम्र लगभग १९-२० वर्ष।
विजय	—	एक युवक।
नीलकण्ठ पिल्ला	—	विजय का मामा।
अप्पू	—	नीलकण्ठ पिल्ला का बेटा। स्कूल-फाइन का विद्यार्थी।
नन्दन	—	अप्पू का मित्र।

परीक्षा

पहला दृश्य

[स्थान—अवकाश प्राप्त प्रधानाध्यापक जनार्दन पिल्ला का घर। चश्मा लगाकर एक छोटी-सी कुर्सी पर बैठे हुए वे परीक्षा की उत्तर पुस्तिकाएँ जाँच रहे हैं।

पास ही एक चौकी पर उत्तर-पुस्तिकाओं का एक बण्डल है। आने वाले अतिथियों के बैठने के लिए दो कुर्सियाँ रखी हुई हैं। संध्या का समय बीत चुका था।]

पहला दृश्य

जनार्दन पिल्ला : भागीरथी !................भागीरथी, वहाँ नहीं है क्या ?

भागीरथी अम्मा : (पान लेकर प्रवेश करती है) सुपारी का भाव बहुत अधिक बढ़ गया है। एक का दाम आठ पैसा है। पान खाना कुछ कम करने पर ही काम चलेगा।

जनार्दन पिल्ला : उसके लिए मैंने नहीं बुलाया। क्या अन्दर दिये में बत्ती बिना तेल के जल रही है ? इसकी बू आती है।

भागीरथी अम्मा : ठीक है। मैं तो उसे बुझाकर ही आयी हूँ। तेल बहुत कम था।

जनार्दन पिल्ला : बिना तेल के बत्ती का जलना घर के लिए हानिकर है।

भागीरथी अम्मा : नाम जपने के बाद बच्चे उसे बुझाना भूल गये।

जनार्दन पिल्ला : यमुना वहाँ नहीं है क्या ?

भाथीरथी अम्मा : वह लेटी है ।

जनार्दन पिल्ला : बुखार उतर गया, कहा न ?

भागीरथी अम्मा : कोई चिन्ता की बात नहीं । एक-दो बार कै हुई, उसी की थकावट में लेटी है ।

जनार्दन पिल्ला : अपच की बीमारी होगी ।

भागीरथी अम्मा : पता नहीं, क्या है ।

जनार्दन पिल्ला : सबेरे डाक्टर को बुलायेंगे । (भागीरथी के मुख की ओर देखकर) ऐसे खड़े रहते समय जरा पान लगा सकती हो न ?

भागीरथी अम्मा : कूटना है न ?

जनार्दन पिल्ला : किसको ?

भागीरथी अम्मा : किसको ? अच्छा हुआ । कत्था और सुपारी को कूटकर लाना है, यही मैंने पूछा ।

जनार्दन पिल्ला : बहुत समय लगेगा । सरौता है न ? काट-काटकर देना काफी है ।

भागीरथी अम्मा : फिर भी यह छोड़ नहीं सकते ? आज देखिए, मैं चूना कुछ अधिक लगाऊँगी । जीभ जरा जले तो ।

जनार्दन पिल्ला : झूठ बोलने पर ही मेरी जीभ जलेगी ।

भागीरथी अम्मा : देखिए, बिना इसके जलेगी कि नहीं ।

[पान लगाने में लग जाती है]

जनार्दन पिल्ला : पिछले चालीस वर्षों से तुम्हारे लगाये पान खाने की मेरी आदत पड़ गयी है । अभी तक तो जीभ जली नहीं । इस जीभ ने तुम्हारे विरुद्ध आज तक कुछ भी नहीं कहा है । आज इतना विद्वेष क्यों ?

भागीरथी अम्मा : मुझे इस जीभ से नहीं, पान से विरोध है।

जनार्दन पिल्ला : मुझे मालूम है। इसलिए उसे काट-काट कर प्रतीकार करने के लिए मैंने तुमसे कहा।

भागीरथी अम्मा : हो, इतनी उदारता !

[पान लगाकर गोला बनाकर देती है]

जनार्दन पिल्ला : (पान मुँह में डालने के पहले) जलेगी ?

भागीरथी अम्मा : इतना डर क्यों ?

जनार्दन पिल्ला : ऐसा ही कहो। (मुँह में डालकर) यह न मिले तो दिमाग काम से इस्तीफा दे दे। जब काम से इस्तीफा देने की सूचना मिलती है, तब मैं तुम्हें बुलाता हूँ।

भागीरथी अम्मा : ये कापियाँ जाँच नहीं चुके क्या ?

जनार्दन पिल्ला : करीब सौ और बाकी हैं।

भागीरथी अम्मा : सो कैसे ? आदि से अन्त तक कोई भी शब्द छोड़े बिना जाँच करने से ही यह पूरा नहीं होता।

जनार्दन पिल्ला : (ठहाका मारकर हँसते हुए) तब तो अच्छा हुआ। अरी, फिर बिना पढ़े अंक डालने हैं क्या ?

भागीरथी अम्मा : जल्दी-जल्दी इधर-उधर देखकर अंक डालना चाहिए। कोई पास हो जाय तो तुम्हें दुःख क्यों ?

जनार्दन पिल्ला : इधर-उधर देखकर अंक डालने की मेरी आदत नहीं।

भागीरथी अम्मा : इसीलिए यह काम पूरा नहीं होता। व्याकरण और अक्षर की गलतियों को चुन-चुनकर देखने की क्या जरूरत है ?

जनार्दन पिल्ला : (साश्चर्य) तुम बहुत होशियार हो। अगली बार तुम्हें परीक्षक बनाने के लिए मैं सिफारिश करूँगा।

भागीरथी अम्मा : ओह, वह बहुत बड़ा काम नहीं है। अगर मैं होती तो दो-तीन दिन में पाँच सौ कापियाँ जाँच डालती।

जनार्दन पिल्ला : (हँसी में) सबको पास करावेगी।

भागीरथी अम्मा : ऐसा नहीं, कुछ लोगों को फेल भी कर दूँगी।

जनार्दन पिल्ला : एक रस्सी में बाँधकर ये कापियाँ ऊपर फेंक देंगी। रस्सी के उस भाग में जो गिरता है, वह फेल है।

भागीरथी अम्मा : ओह, इतनी मजाक क्यों ?

जनार्दन पिल्ला : अरी, यह साग-सब्जी बनाना नहीं है क्या ?

भागीरथी अम्मा : नहीं।

जनार्दन पिल्ला : जाने दो, तू हिसाब लगाने में कैसी है ?

भागीरथी अम्मा : कौन-सा हिसाब ?

जनार्दन पिल्ला : अंकों की गिनती में और हिसाब लगाने में।

भागीरथी अम्मा : अब क्या विचार है ?

जनार्दन पिल्ला : कहूँगा, पहले मेरे प्रश्न का उत्तर दो।

भागीरथी अम्मा : फिर धोबी को कपड़े दिये जाते हैं, उसका हिसाब कौन लगाता है ? उस दिन दूकान के बिल में जो गलती थी, उसका किसको पता लगा ?

जनार्दन पिल्ला : ओहो, तब तो तुम्हें हिसाब लगाना मालूम है।

भागीरथी अम्मा : नहीं, मालूम नहीं।

जनार्दन पिल्ला : तुमने कहा कि यमुना थकावट से लेटी है। यह एक बार और देखना है कि मेरी जाँची कापियों में अंकों की गिनती में कोई गलती है कि नहीं। वह जो काम कल और परसों करती रही थी, उसके लिए तुम्हें नियुक्त कर सकता हूँ।

भागीरथी अम्मा : वह ठीक है। लेकिन आज रात को कंजी, साग-सब्जी चाहिए न ? मेरे रसोई-घर में जाने पर ही वह समय पर तैयार होगी।

जनार्दन पिल्ला : ऐसा हो तो जल्दी जगह छोड़ दो। बिना कुछ कष्ट दिये चली जाओ।

भागीरथी अम्मा : मैं जाती हूँ। पर ऐसा न सोच लें कि उपद्रव दूर हुआ।

जनार्दन पिल्ला : वह क्या ?

भागीरथी अम्मा : बरामदे में कोई मिलने आया है।

जनार्दन पिल्ला : वह कौन ? इस संध्या बेला में—

भागीरथी अम्मा : वहाँ जाकर देखें, तब मालूम होगा कि वह कौन है।

जनार्दन पिल्ला : वहाँ नहीं जाऊँगा। उससे यहीं आने को कहो।

भागीरथी अम्मा : इस कमरे में परीक्षा की कापियाँ रखी हैं न ?

जनार्दन पिल्ला : उसमें क्या ?

भागीरथी अम्मा : यह सब रहस्य है न ?

जनार्दन पिल्ला : ठीक है।

भागीरथी अम्मा : वह इसके अंक जरा देख ले तो ?

जनार्दन पिल्ला : देखने से क्या ? यही तुम्हारा भय है कि वह अपनी आंखों से अंक बढ़ा सकता है ?

भागीरथी अम्मा : वैसा डर नहीं है।

जनार्दन पिल्ला : ऐसा है तो जरा आने को कहो।

[भागीरथी अम्मा जाती है। थोड़ी देर बाद नीलकण्ठ पिल्ला प्रवेश करता है। एक प्राकृत ग्रामीण। हाथ में ताड़ के पत्तों की टोकरी में कुछ आम हैं। उसे नीचे रखकर नमस्कार करता है।]

जनार्दन पिल्ला : (ऐनक ठीक करके चेहरे की ओर ध्यान से देखते हैं। थोड़ी देर तक निश्शब्दता छायी रहती है) पहचाना नहीं।

नीलकण्ठ पिल्ला : कीरिक्काट से।

जनार्दन पिल्ला : (सोचकर) मांकाव का ?

नीलकण्ठ पिल्ला : जी हाँ।

जनार्दन पिल्ला : नीलकण्ठ पिल्ला ?

नीलकण्ठ पिल्ला : जी हाँ।

जनार्दन पिल्ला : नीलकण्ठ पिल्ला, यह कैसा रूप हो गया ? तुम इस तरह के कैसे हो गये ?

नीलकण्ठ पिल्ला : सब मिट्टी में मिल गया, मास्टर साहब।

जनार्दन पिल्ला : देखने पर पहचान नहीं सका। बैठो।

नीलकण्ठ पिल्ला : नहीं, खड़ा रहना ही काफी है। आपके साथ बैठने की योग्यता मुझ में नहीं हैं।

जनार्दन पिल्ला : (आज्ञा के स्वर में) मैंने बैठने को कहा। (हिचकता हुआ नीलकण्ठ पिल्ला बैठ जाता है) योग्यता नहीं है ! जाने भी दो। इस टोकरी में क्या है ?

नीलकण्ठ पिल्ला : चलते समय माताजी ने कहा कि पाँच-छः आम भी लेते जाओ।

जनार्दन पिल्ला : माता जी अब भी जीवित हैं न ?

नीलकण्ठ पिल्ला : ओ, प्राण हैं इतना ही। एक धागे की तरह दुबली-पतली हो गयी हैं। जैसे-तैसे अपने दिन काट रही हैं।

जनार्दन पिल्ला : उन्हें देखे हुए दस-बारह साल हुए। जब वह वात्सल्य मिला था। माता जी को मालूम है कि मुझे आम खाने का बहुत शौक है। (जाकर टोकरी में से आम लेकर सूँघते हैं) वह पहले की-सी सुगन्ध! भागीरथी!

[भागीरथी अम्मा आती है।]

यह कौन है, याद है?

भागीरथी अम्मा : हाँ, भतीजे के साथ रहता है शायद।

नीलकण्ठ पिल्ला : मैं अभी अभी आया हूँ। इधर आने के बाद उधर जाने की सोच रहा था। इतना ही।

जनार्दन पिल्ला : कहने को तो यहाँ इसका एक ऐसा नाता भी है। विजय यहाँ बीच-बीच में आता रहता है। पर भागीरथी ने नीलकण्ठ पिल्ला को देखते ही पहचान लिया।

भागीरथी अम्मा : वह मोटा-ताजा शरीर और उत्साह नहीं रहा, बस इतना ही है। चेहरे का रूप बदला नहीं।

नीलकण्ठ पिल्ला : पहले का जो रूप है, वह अब नष्ट हो गया। कीरिक्काट में ही छोटी लड़की का प्रसव हुआ था न? एक दौड़ में ही मैं—नीलकण्ठ—नर्स को बुला लाया। मुझे वह भूलना बहुत कठिन है।

भागीरथी अम्मा : ठीक है। ऐसा भी सुना है कि गाड़ी वाले के न होने पर उनको बिठाकर गाड़ी चला दी।

नीलकण्ठ पिल्ला : कोच्चुवेलु की गाड़ी और बैल हैं। बहुत तेज चलते हैं।..................

जनार्दन पिल्ला : (पत्नी से) तुम्हें तो सब याद है।

भागीरथी अम्मा : इस घर तक पहुँचने में कोई कठिनाई हुई क्या?

नीलकण्ठ पिल्ला : उस मोड़ पर आकर पता लगाने पर एक दर्जी ने कहा—घर के फाटक पर एक बोर्ड दीखेगा जिस पर 'त्रिवेणी' लिखा है उस घर का नाम—'त्रिवेणी' है न ?

जनार्दन पिल्ला : हाँ, वही नाम है। तीन नदियाँ जहाँ मिलती हैं, वही स्थान है त्रिवेणी। यह भागीरथी, गंगा। बड़ी बेटी, सरस्वती। दूसरी बेटी, यमुना। ये तीनों जहाँ मिल जायँ, वहाँ त्रिवेणी है न ?

नीलकण्ठ पिल्ला : ऐसा है, तब ठीक है। सभी तरह से वह उपयुक्त है।

जनार्दन पिल्ला : (पत्नी से) तू ऐसे क्यों खड़ी है ? नीलकण्ठ पिल्ला के लिए कुछ चाय ले आ। मेरे लिए यह आम भी काट कर ला।

भागीरथी अम्मा : अभी लाऊँगी।

[आम की टोकरी लेकर अन्दर जाती है]

जनार्दन पिल्ला : और क्या समाचार हैं ? काम-धाम कैसे चलता है? दूकानदारी का कुछ काम था न ?

नीलकण्ठ पिल्ला : वह सब कब का खतम हो चुका। कुछ जमीन मिलनी थी। उसके लिए कचहरी में जाते-जाते सब नष्ट हो गया। जमीन भी मिली नहीं और हाथ में जितने पैसे थे, सब फूँक दिये। सत्य का कोई स्थान नहीं, श्रीमन् ! चोरी और धोखेबाजी का जमाना है। जो हज़ार रुपये उसने लिये थे, उन्हें भी लौटाने के लिए कहते तो वह अपने हाथ फैलाकर कहता—साक्षीपत्र कहाँ है ? मैं तो घोर संकट में पड गया हूँ।

जनार्दन पिल्ला : सो तो मैं नहीं जानता। विजय ने एक बार सूचना दी थी कि वे जमीन के बारे में कुछ संघर्ष कर रहे हैं।

नीलकण्ठ पिल्ला : इस तरह के स्नेहपूर्ण एक भतीजे की उपस्थिति में मैं और मेरी माँ सुखपूर्वक रह रहे हैं।

जनार्दन पिल्ला : मैं जानता हूँ कि विजय मेरे लिए भी स्नेहपूर्ण है।

नीलकण्ठ पिल्ला : मैं भी उसके प्रति दयालु हूँ। बचपन में चेचक निकलने पर सभी लोगों ने कहा था कि वह मर गया और उसे चटाई में भी बाँध दिया गया था। उसके बाद नौ रातों तक मैं ही अकेला उसकी देखभाल करता रहा। वह कृतज्ञता उस बच्चे में है।

जनार्दन पिल्ला : ईश्वर की कृपा से तुम लोगों की सहायता करने के लिए उसके पास कुछ धन है।

नीलकण्ठ पिल्ला : धन होने से क्या लाभ। आज किसी की सहायता करने का विचार किसमें दीखता है? दया, स्नेह आदि का नाम कहाँ सुनायी देता है?

जनार्दन पिल्ला : ठीक है।

नीलकण्ठ पिल्ला : मेरे बच्चे की पट्टी पढ़ाने वाला वह है। उसमें मेरा क्या बस है।

जनार्दन पिल्ला : तुम्हारे कितने बच्चे हैं?

नीलकण्ठ पिल्ला : केवल एक ही बेटा है, श्रीमन्। पत्नी तो मर गयी। उस बच्चे को एक ओहदे तक पहुँचाने का मेरा प्रयत्न है।

जनार्दन पिल्ला : वह लड़का विजय के साथ रहता है क्या?

नीलकण्ठ पिल्ला : जी हाँ। वह तो एक कहानी है। 'स्कूल फाइनल' तक वहाँ पढ़ा। छोटी-छोटी चीजें बेंचकर उस लक्ष्य पर पहुँचाया। वह असफल हुआ। जब पढ़ाने का कोई मार्ग नहीं था, तब विजय उसको यहाँ लाया था।

जनार्दन पिल्ला : फिर कालेज में भेजा है क्या ?

नीलकण्ठ पिल्ला : वह किसलिए ? असफल होने वाले को कालेज में प्रवेश कैसे मिलेगा ?

जनार्दन पिल्ला : यहाँ आकर पढ़ने पर असफल हो गया क्या ?

नीलकण्ठ पिल्ला : क्या कहूँ ? इस साल भी परीक्षा में सम्मिलित हुआ।

जनार्दन पिल्ला : औहो, वैसा है। फिर भी विजय ने नहीं कहा। कल भी आया था।

नीलकण्ठ पिल्ला : कहेगा कैसे ? इसके लिए आकर कहना एक बुरा काम है न ? चमड़ा जलाने का काम है। अब जलाने को बाकी कुछ नहीं रहा, इसीलिए मैं स्वयं कमर कस-कर आया हूँ। बाकी सबमें पास हो गया, इसमें भी पास हो गया, तो इस बार बच जाऊँगा। उसके लिए बाप के उधर आते ही यह बात कहनी चाहिए, ऐसे वे लिखें तो मैं क्या करूँ।

जनार्दन पिल्ला : कोई बाप भी आ जायेगा।

नीलकण्ठ पिल्ला : मुझे क्षमा कीजिए, श्रीमन् !

जनार्दन पिल्ला : आने में कोई गलती नहीं। कितना रोल नम्बर है।

नीलकण्ठ पिल्ला : (कुर्ता की जेब में से भय से कांपते हुए हाथ से कागज का एक टुकड़ा निकालता है) यह है ?

जनार्दन पिल्ला : (चश्मा लगाकर रोल नम्बर पढ़ता है) हूँ..............

नीलकण्ठ पिल्ला : यह रोल नम्बर श्रीमान जी के ही पास है क्या ?

जनार्दन पिल्ला : हाँ, यह रोल नम्बर इसी बण्डल में है।

नीलकण्ठ पिल्ला : जाँच समाप्त हो गयी न ?

जनार्दन पिल्ला : सब समाप्त नहीं हुई। लेकिन, यह कापी मैं जाँच चुका हूँ।

नीलकण्ठ पिल्ला : रोल नम्बर याद है न ?

जनार्दन पिल्ला : कुछ भी याद नहीं।

नीलकण्ठ पिल्ला : श्रीमन् भीगी जमीन में ही छेद किया जा सकता है। इस पर ध्यान मत दीजिए।

जनार्दन पिल्ला : गीलापन तो जमीन की बाहरी पर्त पर ही है। नीचे कठोर शिला ही समझनी चाहिए। नीलकण्ठ पिल्ला अंक जानना चाहते हैं। वह मैं बतलाऊँगा। जानते हैं क्या ? जानने के बाद एक शब्द भी न कहें तो मैं कापी खोजूँगा। इस प्रकार एक वायदा करने पर ही मैं इस काम के लिए तैयार हूँ। नीलकण्ठ पिल्ला के लिए अपने करने योग्य काम से भी बड़े काम पर मैं अन्त तक डटा रहूँगा। क्या कहते हो ?

नीलकण्ठ पिल्ला : (अवरुद्ध कण्ठ से) जानना है।

जनार्दन पिल्ला : ठीक, तुम्हें याद है न, मैंने क्या कहा था ?

(जमीन पर बिखरी हुई कापियाँ मेज पर रखता है। उस रोल नम्बर की कापी खोजने के काम में संलग्न हो जाता है। उसमें आँखें लगाकर प्रतिमावत् उठने वाला नीलकण्ठ पिल्ला आपाद-चूड़ पसीने से तर हो जाता है। तौलिया से मुँह और गर्दन पोंछता है। बण्डल में से एक कापी लेकर जनार्दन पिल्ला अपने स्थान पर आ बैठता है।) बाँसठ——

नीलकण्ठ पिल्ला : (मन्द स्वर में बड़े सन्तोष से) तब तो पास हो गया, श्रीमन्..................आपने ही रक्षा की। (पैरों पर गिरता है।)

जनार्दन पिल्ला : उठो ! यह कैसी दुर्बलता है। 'पास हो' ऐसी प्रार्थना करते हुए ही मैंने कापी खोजी थी।

[नीलकण्ठ पिल्ला उठकर आँसू पोंछता है]

फिर भी बाँसठ कैसे ? मैंने किसी को भी पचपन से अधिक अंक नहीं दिये हैं। कुछ समय तक इन्तजार करो। मुझे दुबारा गिनना चाहिए।

नीलकंठ पिल्ला : इस बार उसने बहुत अधिक पढ़ा है।

जनार्दन पिल्ला : श्..............बोलो मत...............

नीलकण्ठ पिल्ला : भगवान दयालु है न !

जनार्दन पिल्ला : (गिनना समाप्त करके) नहीं, ईश्वर दयालु नहीं हैं, नीलकण्ठ पिल्ला ! इस बच्चे के केवल छब्बीस अंक ही हैं।

नीलकण्ठ पिल्ला : (दीर्घ निःश्वास लेकर) हाय !

जनार्दन पिल्ला : (फिर कापी पर देखकर अंक गिनता है) छः और चार, दस और तीन, तेरह और पाँच, अठारह और चार, बाईस और एक, तेईस और तीन, छब्बीस अंक ही हैं। गलती से लिखने में बाँसठ हो गये।

नीलकण्ठ पिल्ला : अब फेल हो गया ?

जनार्दन पिल्ला : ऐसा ही समझना चाहिए।

नीलकण्ठ पिल्ला : (मन्द स्वर में) फेल हुआ ? इस बार भी........ ?

जनार्दन पिल्ला : बैठिए।

नीलकण्ठ पिल्ला : नहीं, मैं जाता हूँ। क्या कहना है। कहने की बात तो कह चुका।

जनार्दन पिल्ला : एक बार तो बैठ जाओ। चाय मँगाऊँगा।

नीलकण्ठ पिल्ला : चाय तो गले से नीचे नहीं उतरेगी, श्रीमन् ! मुझमें बोलने की शक्ति नहीं। मैं जाता हूँ। रक्षा करना हो, तो रक्षा कीजिए। वह कहने की बात नहीं। फिर मन की शान्ति के लिए ही कहा है......मैं......जाता हूँ।

[जाता है।]

जनार्दन पिल्ला : (लगभग सभी क्षण चिन्ता-मग्नता में बिताने के बाद भारी आवाज में) यमुने ! ....यमुने........... ! !

[यमुना आती है। मुख पर शोक का भाव है।]

यमुना : क्या पिता जी ?

जनार्दन पिल्ला—तूने ही गिने हैं न ?

यमुना : जी हाँ, गलती हो गयी क्या ?

जनार्दन पिल्ला : देख !

[यमुना देखती है। काँपती है।]

यमुना : गिनना ठीक है। पहले पृष्ठ में लिखकर—

जनार्दन पिल्ला : हाँ..............उस बेचारे आदमी का दिल तोड़ दिया।

[भागीरथी अम्मा एक तश्तरी में आम के टुकड़ों के साथ प्रवेश करती हैं।]

भागीरथी अम्मा : (चारों ओर देखकर) गया ?

जनार्दन पिल्ला : (अगाध चिन्ता में डूबकर) मैं..............

भागीरथी अम्मा : अच्छे स्वाद का फल..............यहाँ इस तरह का नहीं मिलेगा..............भोजन नहीं करना है क्या ?..............

जनार्दन पिल्ला : (जागकर) हाँ............(एक टुकड़ा लेकर ओठों तक लाकर—कुछ सोचकर—फिर तश्तरी में ही रख देता है।) नहीं...........नहीं चाहिए..............यह नीचे नहीं उतरेगा।

[परदा]

दूसरा दृश्य

[स्थान—विजय के घर का एक भाग। अप्पू एक कैमरा के साथ बैठा है। निरुपयोग फिल्में मेज के ऊपर पड़ी हैं। मित्र नन्दन उत्साह के साथ प्रवेश करता है।]

नन्दन : अरे, आज तू फुटबाल मैच देखने नहीं आया? आज लक्की स्टार और ट्रान्सपोर्ट के बीच एक मैच हुआ था।

अप्पू : सेमीफाइनल्स। ओहो! मुझे मालूम नहीं था। अच्छा हुआ न?

नन्दन : बहुत अच्छा हुआ।

अप्पू : कौन विजयी हुआ?

नन्दन : पूछते हो क्या—लक्की स्टार। तीन गोल से हरा दिया।

अप्पू : तीन गोल से?

नन्दन : पाप्पच्चन ने ही तीन गोल बनाये।

अप्पू : ट्रान्सपोर्ट अव्वल दर्जे की टीम है। आज क्या हो गया? तंकवेलु और माइकेल दोनों खेले नहीं क्या?

नन्दन : सभी मौजूद थे। परन्तु पाप्पच्चन आज बड़ा उत्साही था। वह अन्तिम गोल तो वास्तव में देखने लायक ही था। अरे, वह एक-एक करके छः खिलाड़ियों को हटाता

हुआ बिजली की तरह अकेला गेंद के साथ दौड़ा—— फिर ट्रान्सपोर्ट की 'पेनाल्टी एरिया' के पास पहुँच कर उसने गेंद मारी——(इशारा करने पर पैर मारता है) गोल-कीपर गेंद छू तक नहीं सका——बड़ी जोर से मारी—— वैसी मार मैंने अपने जीवन में कभी नहीं देखी थी।

अप्पू : बहुत अच्छा। तुम्हारे पैर में तो कुछ नहीं हुआ न ?

नन्दन : नहीं रे, मैंने उल्लास के साथ अपना पैर दे मारा था। यह घटना खेल देखते समय घटित हुई।

अप्पू : आगे बैठने वाले की पीठ पर पैर मारा था क्या ?

नन्दन : हाँ, रे ! आगे बैठने वाले की बगल में रखी हुई पुस्तक, झोला और सब कुछ बिखर गया। मैंने ही सारी चीजें उठाकर दीं।

अप्पू : तब लक्की स्टार फाइनल मैच के लिए जा रहा है। दूसरी बार कण्णूर टीम विजयी होगी न ?

नन्दन : हाँ, कल खेल नहीं है। परसों फाइनल मैच होंगे। हम एक साथ चलेंगे।

अप्पू : मैं नहीं चल सकूँगा।

नन्दन : सो क्यों ?

अप्पू : शायद पिताजी आ जायेंगे। इतना ही नहीं, मेरे मन को भी कुछ चैन नहीं है, रे !

नन्दन : परीक्षा का परिणाम न जानने के कारण बेचैनी है क्या ?

अप्पू : यह तीसरी बार परीक्षा में बैठा हूँ। यदि इस बार भी फेल हो गया तो पिता जी मारते-मारते मुझे मुल्के अदम भेज देंगे।

नन्दन : उसकी कोई परवाह नहीं। पास-फेल तो ऐसे होते ही रहते हैं।

अप्पू : तुम जो चाहो, कहो। शुरू से ही तुम पहली बार में पास होते रहे हो।

नन्दन : तुम कर ही क्या सकते हो? मैंने तो सभी तरह की चालाकियाँ की हैं, बताया न?

अप्पू : नकलची हो न?

नन्दन : हाँ, केवल पढ़ना ही पर्याप्त नहीं। पढ़ते समय सभी प्रश्नों का सार कागज के टुकड़ों पर लिखना चाहिए। मैं इन टुकड़ों से नकल करके ही पास हुआ हूँ।

अप्पू : मुझमें इतना साहस नहीं है, भैय्या! देख लें तो गड़बड़ा होगी न?

नन्दन : तब! तब पकड़ लेते हैं। बहुत नुकसान है।

अप्पू : एक परीक्षा में लिखते समय दुर्भाग्य से मेरी जेब में कागज का एक टुकड़ा पड़ा था। मैं काँपता हुआ पसीने से तर हो गया। मुझे ऐसा भय हुआ कि अध्यापक ने मेरी जेब में पड़ा हुआ वह टुकड़ा देख लिया है। उस दशा में मैं जो कुछ जानता था, वह भी नहीं लिख सका।

नन्दन : देखो! शब्दकोष की तरह बड़ी पाठ्य-पुस्तक अपनी जाँघों पर रखूँगा। कोई भी मनुष्य नहीं देख सकेगा। मालूम है क्या?

अप्पू : बड़ा साहस चाहिए।

नन्दन : अब एक नयी चालाकी खोजी गयी है। तुम्हारे पास फोटो लेने वाली फिल्म है न ? (उनमें से एक ने **प्रदर्शन** किया) मोटे कागज में नकल के लिए नोट्स तैयार करके इसमें लपेट लेते हैं। एक रोल् फिल्म की तरह रखेगा। यह फिल्म करधनी में रखेगा। कागज का एक किनारा निकालेगा। किसी के पास आने पर वह कागज बिना किसी परिश्रम के अन्दर चला जायेगा। यह र्...र्... र्...ध्वनि के साथ पूर्व स्थान को ही चला जायेगा। इस नवीनतम प्रयोग का उपयोग मैंने पिछली परीक्षा में किया था।

ाप्पू : पास भी हुए ?

ान्दन : प्रथम श्रेणी में। अन्यथा गणित के प्रमेय और फार्मूला सब रटते-रटते मेरा मस्तिष्क विक्षिप्त हो जाता न ? उसे भी जाने दो। इसको याद करके छाती का भार हल्का करने की चिन्ता में मैं गेंद खेलने और सिनेमा देखने का समय कैसे पाता ?

ाप्पू : वह ठीक है। तुम भाग्यशाली हो।

न्दन : जाने दो। इस परीक्षा में तुम पास हो जाओगे क्या ? तुम्हें अपने किसी पर्चे के नम्बर मालूम हैं क्या ?

ाप्पू : कुछ के मालूम हैं। उनमें पास हो गया हूँ।

न्दन : किसी में सन्देह हो तो बताओ। एक हजार रुपया मुझे दो। मैं तुम्हें पास करा दूँगा।

ाप्पू : पैसे न लेने वाले परीक्षक हैं क्या ?

नन्दन : होंगे। परन्तु पैसा लेने वाले टेबुलेशन क्लर्क बहुत समझने चाहिए। इन परीक्षकों के द्वारा प्रेषित मार्क लिस्ट टेबुलेट करने के बाद ही पास होने वाले सूचि किये जाते हैं। वहाँ पर हम ठीक कर लेंगे।

अप्पू : क्या ?

नन्दन : मैं पूरी जिम्मेदारी ले सकूँगा, कहा न ? एक हजा रुपया लाओ। मैं तुम्हें पास करवा दूँगा।

अप्पू : छि: ! यह बात मैं पहले नहीं जानता था, नन्दन !

नन्दन : आज भी तू नहीं जानता। तू बड़ा पिछड़ा हुआ है छोटा बच्चा ! (एक ओर देखकर) तुम्हारा कोई आ रहा है। मुझे जाने दो। तब परसों हमें एक साथ फाइनल मैच देखने के लिए चलना है। भूलना मत।

अप्पू : ठीक।

[नन्दन जाता है। दूसरी ओर से विजय प्रवेश करता है। हाथ में टेनिस का बल्ला है।]

विजय : कौन गया ?

अप्पू : नन्दन।

विजय : वह गेंद खेलने में पागल ? अप्पू के पिता अब तक नहीं आये न ? मैंने सोचा था कि वे आ गये होंगे। इसीलिए मैं क्लब से दौड़ा हुआ आया। आने का समय बीत गया है।

अप्पू : पिताजी आज आयेंगे क्या ?

विजय : आयेंगे, ऐसा ही लिखा है। शाम को आयेंगे, ऐसा एक पत्र मिला है।

अप्पू : रास्ता न मालूम होने से——

विजय : बस स्टैण्ड तक जाकर देखना था। अगर रास्ता भूल गये तो ?...........

अप्पू : इस शहर में रास्ता भूल जाना आसान है।

विजय : वह ठीक है। "शहर में रहना अच्छा है। पर गलत रास्ते पर चलना ठीक नहीं।" तुम्हारे पिता तुम्हें लिखा करते थे न ?

अप्पू : भैय्या, ऐसा क्यों कहते हैं ?

विजय : कुछ नहीं। वह वाक्य सुनते ही माया के शब्द याद आ गये।

अप्पू : मैं एक बार बस-स्टैण्ड तक जाऊँ क्या ?

विजय : नहीं। मामा रास्ता भूलेंगे नहीं। कुछ देर और प्रतीक्षा करें। तब तक मैं नहा लूँगा।

अप्पू : मेरे बस स्टैण्ड तक न जाने से वे बुरा-भला कहेंगे क्या ?

विजय : परीक्षा में तुम्हारे पास होने की बात सुनकर सारा क्रोध उतर जायेगा। कुछ भी हो, तुम इस मेज पर पड़े सिगरेट छिपाकर रख दो। मामा के नहाने के लिए पानी गरम करने को कहो। उनको दलिया और चटनी पसन्द है। शंकर से वह तैयार करने को कहो। ऊपर घरी किया हुआ एक बिस्तर रखा है, उसे नीचे लाकर ठीक से बिछा दो। मैं नहाकर जल्दी आऊँगा। यदि तब तक न आये तो हम लोग एक साथ चलेंगे। पहले यह कमरा ठीक करो।

अप्पू : वैसा ही सही ।

[विजय अन्दर जाता है]

[अप्पू मेज पर रखे सिगरेट के डिब्बे लेकर मेज के नीचे रखता है। मेज के ऊपर की कुछ चलचित्र मासिकाएँ, केमरा आदि सभी वस्तुओं को छिपाकर रखता है।]

अप्पू : ये चलचित्र-मासिकाएँ देखकर पिताजी सोचेंगे कि मैं केवल यही पढ़ता हूँ। (मेज के पास जाकर स्टैण्ड पर रखी हुई एक फोटो लेता है।) यह भैय्या की भावी पत्नीका फोटो है। सबके सामने यह फोटो रखी जाय या न रखी जाय, यह मैंने भाई से नहीं पूछा। कुछ भी हो, इसको अन्दर रखना ही अच्छा है।

[अप्पू अन्दर जाता है। दूसरी ओर से नीलकण्ठ पिल्ला प्रवेश करता है। रोने से लाल हुई आँखें! बहुत थका हुआ है। छाता और रस्सी से बँधा हुआ झोला एक कोने में रखकर बैठ जाता है। अप्पू कमरे के अन्दर से बाहर निकलते ही पिता को देखकर आश्चर्यचकित हो जाता है।]

अप्पू : पिताजी !

[नीलकण्ठ पिल्ला उसके मुख की ओर नहीं देखते हैं। हाँफ रहे हैं।]

अप्पू : हम अब तक प्रतीक्षा कर रहे थे। विजय भैय्या के आने पर ही मुझे मालूम हुआ कि आप आज ही आयेंगे। नहीं तो बस-स्टैण्ड पर जाकर इन्तजार करता।

[उत्तर मिलने के लिए मुख की ओर देखता है। अब तक वे हाँफ रहे हैं। उनका क्रोध भी बढ़ता जा रहा है।]

अप्पू : (कुछ देर तक निश्शब्द रहने के बाद भयविह्वल होकर) पिताजी, रास्ता भूल गये क्या ?

नीलकण्ठ पिल्ला : (उग्र रूप से मुख पर देखकर) अरे ! कौन भूला है रास्ता ?............(उठकर गरजते हुए) जा इधर से । मेरी आँखों के सामने से चला जा । नहीं तो............

अप्पू : पिता जी !............

नीलकण्ठ पिल्ला : चुप रह ! तेरी आवाज नहीं सुनना चाहता ।

[विजय घबड़ाया हुआ भागकर आता है ।]

विजय : मामा !............

नीलकण्ठ पिल्ला : बेटा ! इसको मेरे सामने से हटा दो । नहीं तो मैं कुछ न कुछ कर डालूँगा ।

अप्पू : पिताजी............उसके लिए............

नीलकण्ठ पिल्ला : जा......बेवकूफ......जा इधर से । फिर अगर ओंठ हिले तो मैं जीभ निकाल लूँगा । मैं शैतान हूँ । जा......चला जाना ही अच्छा है ।......

विजय : (अप्पू से) अप्पू अन्दर जाओ ।......जा......

[दयनीय भाव के दोनों की ओर देखकर अप्पू चला जाता है ।]

नीलकण्ठ पिल्ला : बेटा ! उसको क्यों पालते हैं ? मारते-मारते उसकी खाल उधेड़कर सड़क पर फेंक देना ही अच्छा होगा न ?.........

विजय : मामा बैठिए !

नीलकण्ठ पिल्ला : फिर क्यों बैठना है, बेटा ! क्या देखने के लिए बैठना है ? बिना विचारे ही चोट खायी, बेटा—बिना प्रतीक्षा के......

विजय : क्या हुआ ? मैं नहीं समझा । मामा ! जरा शान्त रहिए ।

नीलकण्ठ पिल्ला : छाया देने वाले घर के ढह जाने पर कैसे शान्त रहूँ, बेटा !

विजय : मामा जी, अप्पू के बारे में कह रहे हैं क्या ?

नीलकण्ठ पिल्ला : इस परीक्षा में उत्तीर्ण होने पर नौकरी देने का वायदा साहब ने किया था। अब जाकर क्या कहूँ ? मैंने सोचा था कि इस बार वह पास होगा। आँखों में अंधकार छा रहा है, बेटा ! मेरी वेदना तुम नहीं जान सकते। जो धन माँ की दवा खरीदने के लिए रखा था, लेकर उसकी फीस के लिए दे दिया था। उस वर्ष भी वह फेल हुआ। आगे पढ़ाने की शक्ति न होने पर यह लड़का तुम्हें सौंप दिया।

विजय : मामा से उसने कहा न ? इस बार वह उत्तीर्ण होगा।

नीलकण्ठ पिल्ला : नहीं, बेटा ! वह पास होगा ! बिना पढ़े-लिखे पास हो भी कैसे ?

विजय : जनार्दन पिल्ला मास्टर के पर्चे के अलावा बाकी सभी पर्चों के अंक मैंने लिखकर भेजे थे न ?

नीलकण्ठ पिल्ला : बस ! एक में फेल हो जाने पर बिल्कुल फेल ही है न ? वह अब बच्चा है क्या ? सोचता-समझता नहीं क्या ? वह मेरी ओर ध्यान दे तो.........हा ! मुझे तिलांजलि देने वाला है वह। वह.........

विजय : मामा ! मैं कहता हूँ कि वह पास होगा। फिर एक रहस्य की बात बताऊँ। जनार्दन पिल्ला मास्टर के पर्चे में भी वह पास होगा।

नीलकण्ठ पिल्ला : नहीं, बेटा ! उसमें उसको केवल छब्बीस अंक मिले हैं।

विजय : छब्बीस थे। किन्तु इससे ज्यादा हैं।

नीलकण्ठ पिल्ला : नहीं.........नहीं.........वह गलत है।

विजय : कहने वाला मैं हूँ। मेरे ऊपर विश्वास नहीं है क्या ? मामा, यद्यपि उसके पास बुद्धि नहीं, फिर भी वह अच्छा है। किसी तरह उसको पास करवाकर ही मैं उसे अपने गाँव में भेजूँगा।

नीलकण्ठ पिल्ला : मेरे बेटे ! मैं तो जनार्दन जी से मिल ही आया हूँ। नीलकण्ठ पिल्ला के पास कमी केवल धन की है। सम्मान नष्ट नहीं किया है। अपने बेटे के खातिर वह भी खो दिया। मैंने उनसे विनम्र प्रार्थना की। किन्तु "क्या करूँ। वह फेल हो गया।" यही उत्तर मिला।

विजय : मामा को उनसे नहीं मिलता था। ओह, कोई बात नहीं। उन्होंने नहीं समझा है कि उसमें अंक मैंने ही दिये हैं। मामा ! मैं झूँठ बोलूँगा क्या ?

नीलकण्ठ पिल्ला : क्या ?

विजय : हाँ, मामाजी ! आपके विश्वास के लिए मैं स्पष्ट कहूँगा। मैंने जनार्दन मास्टर की बेटी यमुना के साथ विवाह करने का निश्चय किया है।

नीलकण्ठ पिल्ला : (साश्चर्य) बेटा !.........

विजय : हाँ, मामाजी ! सब तैयारियाँ हो गयी हैं। अच्छी लड़की है।

नीलकण्ठ पिल्ला : मुझे भी मालूम है।

विजय : मेरे दफ्तर में काम करती है। उन्होंने उसके बारे में कुछ कहा नहीं क्या ?

नीलकण्ठ पिल्ला : नहीं। वही मैं सोच रहा हूँ।

विजय : जनार्दन मास्टर को आप जानते हैं न ? सोचा होगा कि कहने का समय अभी नहीं हुआ है। जन्मपत्रियाँ परीक्षण के लिए भेजी गयी हैं। उसके बाद ही वे सूचित करेंगे।

नीलकण्ठ पिल्ला : कुछ भी हो। लेकिन.........बेटा.........नहीं (पुनः विचाराधीन होकर) नहीं.........उन्होंने दृढ़ स्वर में कहा कि वह फेल हो गया। उन्होंने वह कापी खोजकर बाहर निकाली और कहा कि इसमें योग गलत लिख गया है।

विजय : क्या ? उन्होंने.........

नीलकण्ठ पिल्ला : हाँ, बेटा ! दूसरी बार उन्होंने गिनकर देखा।

विजय : वह कापी दुबारा देखी क्या ? ओहो ! वैसे हैं।

नीलकण्ठ पिल्ला : मेरा जाना अनुचित रहा क्या ?

[विजय सोच-विचार में डूब जाता है]

नीलकण्ठ पिल्ला : बेटा, मैंने ही खीर में कीड़ा डाला है क्या ? मेरे ही कारण सर्वनाश हुआ क्या ?

विजय : (दीर्घ निःश्वास लेकर) परवाह नहीं, मामाजी ! मैं ठीक करूँगा। मामा शान्त रहें। मैं उसे पास कराके ही दम लूँगा।

नीलकण्ठ पिल्ला : बेटा.........

विजय : हाँ ! यह तो फिर मेरा काम है। देखना है कि कम से कम यह करना सम्भव है या नहीं।

[अप्पू एक प्याले में काफी लेकर आता है। नीलकण्ठ पिल्ला उसके मुख की ओर देखते तक नहीं।]

अप्पू : पिताजी !.........

विजय : मामाजी, उसे लेकर पीजिए......हूँ......

[नीलकण्ठ पिल्ला हाथ में प्याला लेकर एक बच्चे की तरह फूट-फूट कर रोते हैं ।]

अप्पू : (रोता हुआ) मेरे पिताजी !.........

[परदा]

तीसरा दृश्य

[स्थान—जनार्दन पिल्ला का भवन । भागीरथी अम्मा और बड़ी बेटी सरस्वती आपस में बातें कर रही हैं ।]

सरस्वती : यह कोई निस्सार बात नहीं ।

भागीरथी अम्मा : वही तो मैंने भी कहा ।

सरस्वती : कलक्टर का कार्य है । कलक्टर ने उनको कमरे में बुलाकर कहा । उन्होंने उसको अपनी जिम्मेदारी में ले लिया ।

भागीरथी अम्मा : अरी, उससे मुझे क्या चाहिए ? तेरा विचार है कि कलक्टर, वायसराय आदि के कहने पर मैं डरूँगी । यह सब सुनकर क्या मुझे सिर के बल खड़ा होना है ? अच्छी बात है यह ।

सरस्वती : अम्मा बात का महत्व नहीं समझतीं । मेरे पति एक तहसीलदार हैं, मालूम है क्या ?

भागीरथी अम्मा : वह जानकर ही तो तुम्हारी शादी की थी ।

सरस्वती : तहसीलदार कलक्टर के अधीन होता है । मालूम है न ?

भागीरथी अम्मा : मेरा जानना कोई जरूरी नहीं ।

सरस्वती : अम्मा आज कुछ चक्कर में हैं ।

भागीरथी अम्मा : हैं ...... ?

सरस्वती : तब उन्हें बुलाकर कलक्टर के कथन को सुना नहीं क्या ?

भागीरथी अम्मा : किसी को ऐसा कहते सुना है न ?

सरस्वती : ओह ! उतनी अनुमति भी अच्छी रही । मैंने कहा कि उनसे कहने पर उन्होंने भार लिया ।

भागीरथी अम्मा : उससे ?

सरस्वती : उससे ? उनके कर्तव्य को निबाहना हमारा भी काम है न ?

भागीरथी अम्मा : मैं कटहल को भाप और आग में पकाकर भेजूँ तो यह पर्याप्त होगा । यदि उसे नेत्तोलि[1] पसन्द है तो मैं कुटम्पुलि[2] को ऐसी अच्छी तरह पकाकर उसके पास भेज दूँगी जैसी कि उसने कभी खायी ही न हो ।

सरस्वती : यह मुझे नापसन्द है ।

भागीरथी अम्मा : क्या ?

सरस्वती : बात के महत्व को समझने पर नासमझी में इधर-उधर की बातें कहना ।

भागीरथी अम्मा : मेरी बेटी मुझसे क्या करने के लिए कहती है ?

सरस्वती : कलक्टर के लड़के को प्रथम श्रेणी के अंक देने चाहिए ।

भागीरथी अम्मा : उतना ही । दिये हैं । कार्य हो गया । तू ऐसे घूरकर क्यों देखती है ? मैंने कहा न ?

सरस्वती : अम्मा का कहना काफी है क्या ?

---

१. एक तरह की कढ़ी (करायल) ।

२. कढ़ी में डाली जाने वाली फुलौरी और मिथौरी ।

गीरथी अम्मा : काफी है न ? कार्य के गौरव को न समझते हुए अब बातें करने वाली कौन है—मैं या तू ?

रस्वती : अम्मा, पिताजी से कहिए ।

ागीरथी अम्मा : नहीं, नहीं। पिताजी कहीं दूर नहीं रहते । अगले कमरे में हैं । बेटी ही उधर जाकर उनकी मुख-मुद्रा देखकर पिता से कह दे। उत्तर पुस्तिकाएँ और पेंसिल आदि वहीं हैं । प्रथम श्रेणी या उससे अधिक नम्बर दिलाकर आजा ।

सरस्वती : सो नहीं । अम्मा का कहना ही काफी है।

भागीरथी अम्मा : वह क्यों ?

सरस्वती : मैं पिताजी को जानती नहीं हूँ क्या ?

भागीरथी अम्मा : तू तो बाईस वर्षों से ही जानती है। मुझे जानते हुए इकतालीस वर्ष बीत गये ।

सरस्वती : इसलिए मेरी अपेक्षा माँ की बात अधिक सुनेंगे ।

भागीरथी अम्मा : तब तो तुम बाईस सालों के बाद भी बाप को नहीं समझ सकी। मैं तो पहले दिन ही समझ लिया कि ऐसी बातें कहने से कोई फायदा नहीं ।

सरस्वती : इसके लिए एक उपाय करना है, माँ ।

भागीरथी अम्मा : उपाय यह है कि पिता को परीक्षक के पद से हटाया जाय ।

सरस्वती : छिः, वह नहीं ।

भागीरथी अम्मा : नहीं तो तेरे कलक्टर के बेटे से परीक्षा में साफ-साफ लिखने के लिए कहना चाहिए ।

सरस्वती : माँ, मैं दुविधा में पड़ गयी हूँ। घर जाकर मैं उनसे और क्या कहूँ ?

भागीरथी अम्मा : मार खाये बिना रहने का मार्ग देखो ।

सरस्वती : यों ही मजाक मत बनाइये ।

भागीरथी अम्मा : ओ !

सरस्वती : (सोचकर) माँ, मैं ही एक बार बाप से कहकर देखूँ !

भागीरथी अम्मा : ओहो !

सरस्वती : अन्यथा नहीं ।

भागीरथी अम्मा : नहीं ।

सरस्वती : उनसे स्वयं आकर बाप से कहने के लिए कहूँ तो ?

भागीरथी अम्मा : कहने पर सब कुछ सुनेंगे । बेटी के पति का कहा हुआ सब कुछ सुनेंगे न ?

सरस्वती : केवल सुनेंगे, है न ?

भागीरथी अम्मा : वह बात ज्योतिष की है। कुछ भी हो, पिताजी आ रहे हैं । तुम्हारे पति एक बड़े तहसीलदार हैं, ऐसा कहने पर वे सुनेंगे ।

सरस्वती : यों ही चुपचाप बैठिए, अम्मा !

[जनार्दन पिल्ला प्रवेश करता है । मन्दिर जाने की पोशाक]

जनार्दन पिल्ला : अरी, सरसू ? तू कब आ गयी ?

सरस्वती : थोड़ी देर हुई ।

जनार्दन पिल्ला : तूने यमुना को देखा न ?

सरस्वती : मैं अब तक उसके ही पास थी । अब भी काफी बुखार है ।

भागीरथी अम्मा : जरा सो जाती, तो बुखार उतरता ।

जनार्दन पिल्ला : परवाह नहीं । दो दिन ऐसा ही रहने दें । हमको मन्दिर से लौटते समय डाक्टर तम्पी के पास चलना चाहिए ।

भागीरथी अम्मा : ओहो, एक कुप्पी भी लेना है क्या ?

जनार्दन पिल्ला : कुप्पी और भरणी कुछ नहीं चाहिए। मन्दिर जाने के लिए जरा तैयार हो जाओ।

भागीरथी अम्मा : वह ठीक है। मेरी तैयारी में कौन-से घण्टे लगते हैं ? नहा-धो चुकी हूँ। यह धोती बदलकर अभी आ जाऊँगी।

जनार्दन पिल्ला : तुमको अपने बाल घुँघराले करवा लेना चाहिए। है न, सरसू ?

भागीरथी अम्मा : ऐसी ही अनेक बातें सोचेंगे।

[जाती है।]

जनार्दन पिल्ला : यमुना के विवाह के बारे में माँ ने कुछ कहा न ?

सरस्वती : कहा। यह भी कहा कि जन्म-पत्रियाँ खूब मिल गयी हैं।

जनार्दन पिल्ला : आज ही एक ज्योतिषी आया था। तू ने विजय को देखा है न ?

सरस्वती : वह अच्छा है। यहाँ हमेशा आया करता है न ? अच्छा खासा जवान है।

जनार्दन पिल्ला : मुझे भी ऐसा ही लगा। जो भी हो, एक बार कीरिक्काट जाकर पिता से मिलने के बाद ही तिथि निश्चित् करनी है। जाने से पहले परीक्षा की ये सब कापियाँ देखनी हैं।

सरस्वती : माघ मास के पहले ही होना है। उसके बाद उनको दूसरे स्थान पर जाना पड़ेगा।

जनार्दन पिल्ला : तेरे पति के स्थल-परिवतन के कारण विवाह का शुभ मुहूर्त निश्चित करना मुश्किल है। तहसीलदार साहब को यमुना के लिए कोई अच्छा लड़का नहीं मिल सका।

सरस्वती : एक बार एक इंजीनियर के बारे में कहा था, भूल गये क्या, पिताजी ?

जनार्दन पिल्ला : अरी, वह विवाह है क्या ? उस इंजीनियर के पैदा होने से लगाकर इंजीनियरी की परीक्षा पास करने तक उसके पिता ने जितनी रकम खर्च की है, हिसाब करके उतना पैसा देने पर विवाह होगा। उसके लिए तो हमें अपना घर-द्वार बेंच कर देना पड़ेगा। तब बाजार में बेंचने के लिए रखी गयी चक्की, अलमारी या पुस्तिका है यह पति ?

सरस्वती : कुछ भी हो, अब उन सबके बिना ही ईश्वर ने सहायता की न ?

जनार्दन पिल्ला : तब तेरा अभिप्राय यह है कि यमुना के लिए विजय ही अच्छा रहेगा, है न ?

सरस्वती : (मुख के देखे बिना) मेरा जैसा भाग्य उसका न होगा।

जनार्दन पिल्ला : (कुछ क्षण मुख की ओर ध्यान से देखकर) तेरे भाग्य को क्या हुआ ?

सरस्वती : माँ-बापू मेरे प्रतीक थे। उन संकल्पों से मैंने दूसरे घर में प्रवेश किया, पर समझ गयी कि मेरे संकल्पों की कोई कीमत नहीं। अब बोध हुआ कि मुझसे अपरिचित कोई अन्य वस्तु उधर पहुँचा दी गयी है। मैं बिल्कुल बदल गयी हूँ, पिताजी !
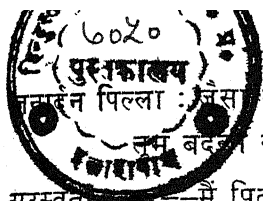
जनार्दन पिल्ला : जैसा मैं तुम्हें देख देख रहा हूँ, उससे स्पष्ट है कि तुम बदली नहीं।

सरस्वती : नहीं—मैं पिताजी की आँखें देखते ही पुरानी सरस्वती बनाने का प्रयास कर रही हूँ। पिता को नहीं मालूम कि आज मैं यहाँ क्यों आयी। अपने उनके ऊपर के एक आफीसर के बेटे के नम्बर बढ़वाने की सिफारिश लेकर आयी हूँ। बाप की वह पुरानी बेटी होती तो क्या वह उसके लिए तैयार होती, पिता जी ?

जनार्दन पिल्ला : उसकी परवाह नहीं। यदि तू ठीक तरह से रहती, तो वे नहीं भेजते।

सरस्वती : उनको वचन दिया। अगर वह सम्भव न हुआ, तो सारा काम मिट्टी में मिल जायेगा। यह सुनकर मैं उठकर चली आयी।

जनार्दन पिल्ला : तुझको कहना चाहिए था कि यदि उससे कुछ नष्ट होने वाला कार्य है तो वह कार्य नहीं चाहिए। मैं चाहता हूँ कि उस प्रकार कहने के लिए तीन-चार लोग इस गाँव में हो जायँ, बेटी !

सरस्वती : मैं इन्कार करूँ तो भी कोई फायदा नहीं।

जनार्दन पिल्ला : किसने कहा कि फायदा नहीं।

सरस्वती : वे इस समय तक ऐसे ही दिन काटते रहे। शकर, सीमेंट आदि के परमिट देने के लिए वे घूस माँगते हैं। उस धन से खरीदी गयी साड़ी मैं पहनती हूँ।

जनार्दन पिल्ला : तो मुझे आग जैसी लगती है न ?

सरस्वती : आग में डूबी हुई हूँ तो गर्मी कैसे लगे ? इसीलिए मैंने कहा कि मैं पूर्णरूप से परिवर्तित हो गयी हूँ ।

जनार्दन पिल्ला : तू तो उन्हें बदलने की बजाय दूसरों को बदलने का प्रयास कर रही है ।

सरस्वती : पिताजी सोचते हैं कि मैंने परिश्रम नहीं किया । मेरे उस प्रयास के कारण ही वे मुझसे घृणा करने लगे । मैं सफेद कपड़ों पर सन्तुष्ट होने वाली थी न ? सोने के आभूषणों से मुझे घृणा थी न ? केवल तुच्छ विभवों में ही आनन्द प्राप्त कर लेती थी । उस घर में उनकी तृप्ति के लिए, उनको प्रसन्न करने के लिए, हँसी-खुशी से बातचीत करने के लिए, तथा अपने सहवास को रुचिकर बनाने के लिए मैं बदल गयी ।

जनार्दन पिल्ला : तू पराजित हो गयी । वे विजयी हुए ।

सरस्वती : सो कैसे ? इसीलिए अब मैं यहाँ रहती हूँ ।

जनार्दन पिल्ला : वे बड़े चोर और रिश्वतखोर बनकर वहाँ रहते हैं ।

सरस्वती : पिताजी !

जनार्दन पिल्ला : हाँ ! मैं तो वैसे ही कहूँगा । तू प्रारम्भ से ही दृढ़ थी तो उसकी रक्षा करनी चाहिए थी ।

सरस्वती : वहाँ से मुझे फिर इस घर में आकर रहना पड़ेगा ।

जनार्दन पिल्ला : बोध होने पर वह दुबारा पालकी में बिठाकर ले जायेगा ।

सरस्वती : पिताजी !

जनार्दन पिल्ला : गर्मी से तेरा शरीर बुरा नहीं होना था । तेरा

मन दुःखी नहीं होना था। तू सिर ऊँचा करके खड़ी हो सकती थी।

सरस्वती : (डबडबाई हुई आंखों से) फिर भी मैं अपराधिनी हूँ ? ये सब सहन करने पर भी ?

जनार्दन पिल्ला : (पास जाकर सहलाते हुए) पिता तुझसे ही कह सकते हैं। परवाह नहीं। अभी कुछ देर नहीं हुई। तू फिर समझा-बुझाकर उन्हें सच्चे मार्ग पर ला सकेगी। कुछ लातें खानी पड़ेंगी। कष्ट भोगने पड़ेंगे। भला-बुरा सुनना होगा। धैर्य धारण करना है। धन का लोभ एक व्याधि है, बेटी ! तू सुदृढ़ रह कि तुझे चोरी का धन नहीं छूना है। तुरन्त नहीं, धीरे-धीरे आश्वासन मिलेगा। व्रत लेकर तू परीक्षा कर।......(वात्सल्य से) मेरी आँखों को देखो...क्या परीक्षा करोगी ?

सरस्वती : करूँगी।

जनार्दन पिल्ला : बिल्कुल ?

सरस्वती : क्या अपने देवता से झूठ बोलूंगी ?

जनार्दन पिल्ला : सिर पर हाथ फेरते हुए) तू बिल्कुल मत डर। सब ठीक होगा। पिता कहते हैं न ? धैर्य धारण कर।

[भागीरथी अम्मा प्रवेश करती है।]

भागीरथी अम्मा : काम बन गया क्या, बेटी ?

जनार्दन पिल्ला : तब तुमने सोचा होगा कि अपनी बेटी की बात मैं सुनूंगा नहीं। (सरस्वती से) देख, एक धोती बदलने की बात कहकर कितनी देर लगा दी। फिर भी वेष-भूषा की भंगिमा ?

भागीरथी अम्मा : पसन्द नहीं क्या ?

जनार्दन पिल्ला : बाल ऊँचे करके बाँधो। मैं तो अब भी कहता हूँ.........

भागीरथी अम्मा : ओ......उसके लिए किसी और को खोजो।

जनार्दन पिल्ला : अपने इस बुढ़ापे में किसे खोजूँ ?

भागीरथी अम्मा : मन्दिर तक जाकर हमें जल्दी लौटना है। यह लो चाभी !

जनार्दन पिल्ला : किसकी ?

भागीरथी अम्मा : अपने कमरे की। क्या खोलकर जाना ठीक नहीं (सरस्वती को देखकर) तू क्यों चुपचाप बैठी है ?

जनार्दन पिल्ला : उसके लिए भी तुम्हीं चटचट करती हो तो वह बोले भी कैसे ?

[एक कार का हार्न सुनायी पड़ता है। ड्राइवर आकर झाँकता है।]

ड्राइवर : कार आ गयी।

जनार्दन पिल्ला : किसके लिए ?

सरस्वती : मेरे जाने के लिए। (ड्राइवर से) वे ?

ड्राइवर : कार में हैं।

सरस्वती : मैं अभी आती हूँ।

[ड्राइवर जाता है।]

भागीरथी अम्मा : तहसीलदार साहब उतरकर क्यों नहीं आते ?

सरस्वती : पता नहीं।

जनार्दन पिल्ला : उससे क्या ? वे इधर न आवें, तो हमको उधर चलना चाहिए न ? मोहम्मद पहाड़ के पास न जावे तो पहाड़ मोहम्मद के पास जायेगा ही।

भागीरथी अम्मा : तो मैं पहाड़ हूँ क्या ?

जनार्दन पिल्ला : नहीं। तुम तो नदी हो न ?

भागीरथी अम्मा : यमुने !...यमुने !!

[यमुना प्रवेश करती है।]

यमुना : क्या अम्मा ?

भागीरथी अम्मा : हम मन्दिर जाकर अभी लौट आयेंगे। तू इधर-उधर मत जाना।

सरस्वती : यमुने ! मैं कल आऊँगी।

भागीरथी अम्मा : तू सामने का दरवाजा बन्द कर लेगी न ? अब हम जाते हैं।

जनार्दन पिल्ला : बेटी, यह चाभी तू अपने पास रख। (यमुना जाकर लेती है) तेरे हाथ क्यों काँप रहे हैं ?

यमुना : कुछ नहीं।

[परदा]

चौथा दृश्य

[स्थान—जनार्दन पिल्ला का भवन। पिछले दृश्य के व्यतीत हुए लगभग आधा घण्टा हुआ। उस मेज पर, जिस पर रेडियो रखा है, यमुना अपना सिर हाथ से थामे हुए सोच-विचार में बैठी है। रेडियो से एक शोक पूर्ण गीत निकल रहा है। विजय एक ओर से प्रवेश करता है। कुछ क्षण तक उसको ही देखता रहता है। वह नहीं जान पाती है। हिलतीडुलती भी नहीं है।]

विजय : यमुने !

यमुना : हैं ?......(सहमकर उठती है। रेडियो बन्द करती है।)

विजय : वह गान बीच में ही नहीं बन्द करना था।

यमुना : कोई बात नहीं । बैठिए ।

विजय : माता-पिता को मन्दिर की ओर जाते देखा ।

यमुना : उन्होंने भैय्या को देखा क्या ?

विजय : केवल देखा ही नहीं, बातचीत भी की । कहा कि यमुना स्वस्थ नहीं । मैंने पूछा : जाकर देखूँ । इस प्रकार अनुमति लेकर ही आया हूँ ।

यमुना : मैंने पूरे सप्ताह की छुट्टी ले ली ।

विजय : आफिस में न देखने पर ही मैंने सोचा कि कोई गड़बड़ी है । क्या हुआ ?

यमुना : न मालूम, क्या हुआ । मन में कोई वेदना हुई । उसके कारण तेज बुखार भी है । एक अखबार को उठाने की भी शक्ति मुझमें नहीं । इतनी कमज़ोरी है ।

विजय : आज भी बुखार है ?

यमुना : आज बहुत संतोष है––जानते हो क्या ? ज्योतिषी ने जन्मपत्री देखकर आज के लिए ठीक ही कहा था ।

विजय : मैंने जान लिया । ज्योतिषी के कहने के पहले ही मैं समझ गया न ?

यमुना : केवल हमारे जान लेने से क्या होता है ? यदि केवल हमारा जान लेना ही काफी हो तो ये आधि-व्याधि हो ही क्यों ? तब तो बहुत दिन पहले ही मैं भैय्या के घर में रहने लगी थी ।

विजय : यदि ऐसा है तो क्या हम लोग ऐसे बैठ सकेंगे ? मेरे नौकर-चाकर, जिनकी भाषा कोंकिणी है, अपनी मालकिन को संतुष्ट करने के लिए सुमधुर नाश्ते के साथ प्रतीक्षा करेंगे ।

यमुना : उनकी बोली को सुनकर मैं कई बार हँसा करूँगी। क्या मैं उस घर को उतना गन्दा रहने दूँगी जितना कि वह अब है ?

विजय : धोती और कमीज पर लोहा मुझे ही करना पड़ेगा क्या ?

यमुना : वह सब ठीक है। किन्तु क्लब में जाना और दिन-रात ताश खेलना मैं बन्द करवा दूँगी।

विजय : टेनिस भी नहीं खेलने दोगी क्या ?

यमुना : छः बजे घर पहुँच जाना चाहिए।

विजय : पहुँचना चाहिए ? नहीं तो हम लोग सिनेमा देखने कैसे चल सकते हैं ?

यमुना : एक बात और। अखबार में दीखने वाली वह बुशर्ट पहनेंगे तो मैं साथ नहीं आऊँगी।

विजय : मैं 'टेरलीन' की सफेद कमीज पहनूँगा। यमुना को वह शीशे के समान साड़ी नहीं पहननी है।

यमुना : ओह, वैसी साड़ी मेरे पास है ही नहीं। मुझे पसन्द भी नहीं। सिनेमा देखने के लिए जाते समय मुझे 'आइस्क्रीम' खरीद कर देनी पड़ेगी।

विजय : वह दूँगा। लेकिन यह मत कहना कि मुझे टैक्सी-कार चाहिए। इन सबके लिए पैसा पर्याप्त नहीं होगा।

यमुना : ओह, मुझे तो पैदल चलना ही पसन्द है।

विजय : तब तो उठो। हमें चलना चाहिए।

यमुना : इस समय ?

विजय : क्यों ?

यमुना : इच्छा तो है। परन्तु 'अनुमति के बिना किसी अन्य प्रवेश करने पर उसे यातना सहनी पड़ेगी', ऐसा लिख कर मुझे बाहर एक बोर्ड लगा देना है न ?

विजय : मैं कोई अन्य नहीं हूँ। इस चहारदीवारी के अन्द प्रवेश करने का अधिकार मुझे प्राप्त हो गया है।

यमुना : प्रमाण प्राप्त न होने तक अधिकार नहीं मिलेगा।

विजय : यह एक निर्दय रीति-रिवाज है न ?

यमुना : कुछ दिनों के अन्दर ही पिताजी भैय्या के पिताजी से कीरिक्काट जाकर मिलेंगे और बातचीत करेंगे। सुना ?

विजय : उसके लिए समय नष्ट करने की जरूरत नहीं। तिथि निश्चित करके सूचित करना ही काफी है। पिताजी ने कल सम्मति दे दी। अरी, इतना सब कुछ हो जाने पर भी यमुना का मन क्यों दुःखी है ?

यमुना : मेरे मन में दुःख क्यों है, भैय्या ? हमारी स्थिति भाई नहीं जानते हैं क्या ?

विजय : सो नहीं होगा। यमुना को प्रसन्न रहना चाहिए। तुम्हारे हँस-खेलकर संतोष के साथ जीवन बिताने पर ही मुझे भी सुख मिलेगा।

यमुना : विवाह की तिथि किसी कारणवश आगे बढ़ायी जा सकती है न ?

विजय : तिथि बढ़ाने का कोई कारण नहीं है। जल्दी से जल्दी तिथि निश्चित होगी। मुझे केवल एक ही बात कहनी है। इधर-उधर की बातें सोचकर अपने मन को दुःखी मत करना। सहमत हो न ?

[यमुना कुछ देर उनकी ओर देखकर मौन रहती है।]

यमुना : भैय्या !

विजय : मुझे वचन दीजिए।

यमुना : मैं सन्तुष्ट रहूँगी। आप रोज आयेंगे न ?

विजय : यहाँ आना उचित है क्या ? रोज दफ्तर में मिलेंगे।

यमुना : इसके बीतने तक शायद मैं दफ्तर न जाऊँ। परन्तु आपको रोज देखने पर ही सन्तोष होगा।

विजय : मैं कोशिश करूँगा। किसी न किसी बहाने से मैं आने का प्रयास करूँगा। अब मैं जाता हूँ। उनके मन्दिर से आने का समय हो गया।

यमुना : नहीं। उनके आने के बाद ही जाइए।

विजय : ठीक है। उनकी जानकारी, अनुमति और आशीर्वाद से ही मैं यहाँ खड़ा हूँ। किन्तु खाने-पीने के लिए कुछ देना पड़ेगा।

यमुना : उसके लिए मुझे ही रसोई घर में जाना पड़ेगा।

विजय : तो नहीं चाहिए।

यमुना : (सोचकर) आपके मामा कुछ पके आम लाये थे। वे ले आऊँ।

विजय : नहीं, कुछ भी नहीं चाहिए। वह कहते समय एक बात याद आयी। नीलकण्ठ मामा का इधर आना बड़ा गड़बड़ रहा न ?

यमुना : हाय रे ! उस दिन जैसा तो आज तक जीवन में कभी हुआ ही नहीं। मैं दुःखी हुई। उस गलती की गहराई और विस्तार को देखे बिना हमने वह किया।

विजय : मैंने तो जान-बूझकर किया। मैं तो बिना किये नहीं बैठ सका। नीलकण्ठ मामा का मैं उतना कर्जदार हूँ।

यमुना : पिताजी ने पूरे विश्वास से सबके अंकों का जोड़ ठीक करने का काम मुझे सौंपा।

विजय : उस प्रकार न सौंपते तो यह अवसर नहीं मिलता। मैंने सोचा कि दयालु ईश्वर ने एक उपाय दिखाया है।

यमुना : जिस ईश्वर ने असत्य करने का अवसर दिया, उसको बाहर निकालकर उन्होंने ही उसका समर्थन किया।

विजय : क्या तुम्हारे पिताजी को मालूम हुआ कि हमने ही वह ठीक किया है ? क्या हुआ ?

यमुना : पिताजी ने मुझे बुलाया। कापी को दिखाकर मुझसे पूछा कि यह तू ने ही गिना है न ? 'हाँ' कहने पर दुबारा गिनने को कहा। मैंने अपनी सम्मति दी कि छब्बीस (२६) की जगह धोखे से बाँसठ (६२) लिख गया।

विजय : गाली दी क्या ?

यमुना : कुछ भी नहीं कहा।

विजय : तब सोचा होगा कि नकल करते समय गलती हुई होगी।

यमुना : कुछ भी हो। मुझे भी नहीं मालूम था कि छब्बीस कैसे बाँसठ हो गये। मुझे लगा कि मेरा हृदय स्तब्ध हुआ जा रहा है। मेरी सुनने, देखने और कहने की शक्ति नष्ट हो गयी थी। वैसा क्षण आज तक कभी नहीं आया है। उस रात को मुझे नींद नहीं आयी। भैय्या ! उस दिन पहली बार मुझे अपने ऊपर ग्लानि हुई। जो कुछ पाया, सब नष्ट हो गया।

विजय : मेरी प्यारी !

यमुना : गुड़िया की तरह अचेतन होकर दीवार की ओर घूरते हुए मैंने वह रात बितायी। सबेरा होने पर रोज की तरह पिता विनोद करते हुए आये।

विजय : उन्होंने उसको निस्सार रूप में सोचा। नहीं तो अपराधी मैं हूँ। तुम साक्षी हो न ? तुम ऐसी हो कि एक बूंद पानी को एक समुद्र के रूप में बढ़ाती हो।

यमुना : मुझे हँसाने के बाद ही वे मेरे पास से गये। मेरे पिताजी ऐसे हैं।

विजय : एक बार सोचें तो मन को इस प्रकार चक्की में पिसाने की आवश्यकता नहीं। मैं एम० ए० पास हूँ। उस प्रोफेसर ने मुझे सत्रह अंक ज्यादा दिये, जिनको मेरे ऊपर वात्सल्य था। इसलिए मैं प्रथम श्रेणी में पास हुआ। और अब मुझे चार सौ पचास रुपये वेतन भी मिलता है।

यमुना : मनुष्य कई तरह के होते हैं न ? सबका आदर्श और मन एक तरह का नहीं होता।

विजय : मालूम होना चाहिए कि परीक्षा में शामिल होने वालों की स्थिति भी ऐसी ही है। उनमें बुद्धिमान भी हैं और मूर्ख भी। परीक्षा के समय सबकी परिस्थिति एक तरह की नहीं होती। इसी एक कापी से क्या-क्या नहीं हो जाता।

यमुना : सफल होने वाले सभी बुद्धिमान और असफल होने वाले सभी मूर्ख नहीं होंगे।

विजय : इतना ही नहीं। गणित को छोड़कर अन्य सभी विषयों के उत्तरों में पूरे-पूरे नम्बर नहीं दिये जा सकते।

यमुना : सम्भव भी नहीं।

विजय : वहाँ पर भी उसका अन्त नहीं। यमुना, क्या तुम सोचती हो कि आज परीक्षा में पास होने वाले सच्चे रूप से पास होते हैं।

यमुना : नहीं।

विजय : अधिकतर लोग दूसरों की नकल करके उत्तीर्ण होते हैं। बहुत से लोग रिश्वत देकर नम्बर बढ़वाते है। कुछ लोग नम्बर जोड़ने वालों की असावधानी से उत्तीर्ण हो जाते हैं। इस प्रकार पास होने वाले लोग वास्तव में फेल ही होते हैं।

यमुना : किसने कहा कि वह सब ठीक नहीं।

विजय : मैं यही कहना चाहता हूँ कि हमने जो किया, उसको बड़ा अपराध मानकर मन को मत जलाओ।

यमुना : जाने दो। जो हुआ सो हो गया न? हम उसे भूल जायँ।

विजय : जो होने वाला था, नहीं हुआ, यमुने!

यमुना : उसका क्या अर्थ है, भैय्या?

विजय : हमारा श्रम—कभी-कभी गलत होगा। अधर्म होगा—वह समस्या नहीं है—कुछ भी हो, वह सम्भव नहीं हो सका।

यमुना : क्या किया जाय। वह है विधि का निश्चय।

विजय : मेरी यमुना! गलत मत सोचो।

यमुना : क्या मैं आपको गलत समझूँगी? भैय्या......

विजय : मेरी स्थिति तुम नहीं समझतीं। मेरे निष्कलंक मामा गाँव से इसीलिए इधर दौड़कर आये कि बेटे की सफलता को जानकर सन्तोष की एक साँस ले सकें। इसी विश्वास के साथ उन्होंने उसको मेरे साथ भेजा है कि मैं उसकी पढ़ाई की ओर विशेष ध्यान दूँगा। तुम्हारे पिताजी को देखने के बाद वे निश्चेतन-से हो गये। अब वे मेरे घर में पंखहीन पक्षी के समान लेटे हैं।

यमुना : भैय्या......

[वह हाँफती हुई किसी दूसरी ओर निगाह दौड़ाती है।]

विजय : बड़ी ही कारुणिक है अप्पू की कथा। उस ऊर्जस्वी बालक को तुमने देखा है क्या ? कुछ समय से वह ज्वर से पीड़ित हो लेटा हुआ है। पिताजी के पास नहीं जा सकता। मेरे पास भी नहीं आ सकता। मेरे कहने पर उसे विश्वास हो गया कि वह पास हो गया है। यह कहना गलत नहीं कि वह इस समय बहुत दयनीय स्थिति में है।

यमुना : भैय्या, मेरा सिर फटा जा रहा है।

विजय : उन दोनों को आश्वासन देने के पश्चात् ही मैं आया। कैसे भी हो, मैं यह कार्य करूँगा।

यमुना : हा !

विजय : यदि उसे नौ नम्बर और मिल जायँ तो वह पास हो जायेगा। 'मैं कोशिश करूँ तो काम बन जायेगा', यदि वे ऐसी प्रतीक्षा करें तो इसमें गलती ही क्या ? तुम्हारे पिता एक भावुक व्यक्ति हैं न ?

यमुना : (स्वप्न देखने की मुद्रा में) मेरे पिता ईश्वर हैं, भैय्या !

विजय : मैं जानता हूँ कि मेरा कथन क्रूरतापूर्ण है। परन्तु, दूसरा कोई उपाय न होने से मैं ऐसा कह रहा हूँ। मेरे लिए तुमको नौ नम्बरों की भीख माँगनी ही चाहिए।

यमुना : मुझे ?

[वह सुदूर पर देखती हुई भयभीत हो जाती है।]

विजय : मेरा प्रयास सफल नहीं हुआ। मैं कैसे उनसे कहूँगी ? उसका भविष्य क्या है, किसने देखा है ?

यमुना : (खड़ी होकर) मैं ?

विजय : हाँ, प्रिये ! तेरे कहने पर वे सुनेंगे। मेरे लिए, देखो, मेरे मुख की ओर देखो—तुम कहोगी न ?

यमुना : (मुख की ओर धीरे-धीरे देखती हुई) मैं...मैं...कहूँ क्या ?

विजय : हाँ, यमुने !......

यमुना : (दृढ़ स्वर में) नहीं...नहीं...मैं नहीं कहूँगी। कभी नहीं। आप उसके लिए मजबूर मत कीजिए......मुझमें कुछ करुणा है न ?

विजय : क्या मेरे लिए वह पीड़ा सह नहीं सकोगी ?

यमुना : केवल मेरे लिए कोई पीड़ा हो, मैं उसे सहन करूँगी, भैय्या ! इस हृदय पर कुठार चलवाने को कहें तो मैं हँसती हुई वह करूँगी। लेकिन मेरे पिताजी को पीड़ा पहुँचाने की बात मत कहिए। मैं नहीं करूँगी।

विजय : यदि नौ नम्बर और दे दें तो क्या आकाश टूट पड़ेगा, यमुने ?

यमुना : आकाश नहीं गिरेगा। मैं वह प्रार्थना करूँ तो गिरेंगे मेरे पिता।

विजय : यमुने !

यमुना : मत सोचिए कि यह आदेश का उल्लंघन है। अपनी यमुना को पीड़ित मत कीजिए।

विजय : जैसा तुम्हारा अपना मत है, वैसा ही सुदृढ़ मत मेरा भी है। मैं दो में से एक जानता हूँ। तुम नहीं कहोगी। मैं ही उनके सामने कहूँगा।

यमुना : हे मेरे ईश्वर !

विजय : माता-पिता आ रहे हैं।

यमुना : हाय रे !

[आँसू पोंछती हुई अन्दर चली जाती है। जनार्दन पिल्ला और भागीरथी अम्मा मन्दिर से लौटते हैं।]

जनार्दन पिल्ला : अच्छा हुआ। मैंने सोचा कि तुम अब तक चले गये होगे।

विजय : जाने ही वाला था।

भागीरथी अम्मा : बेटा, प्रसाद ले। (पत्ता बदलती है। विजय चन्दन लगाता है।)

दीपाराधन के समय आज जैसी चैतन्यता मैंने कभी नहीं देखी।

जनार्दन पिल्ला : मैं आँखें बन्द किये था। इसलिए उस चेतनता पर मेरा ध्यान नहीं गया।

भागीरथी अम्मा : यह कोई नयी बात तो है नहीं। अच्छा समय आने पर आप आँखें बन्द कर लेंगे।

जनार्दन पिल्ला : तुम्हारा आँखों से मेरा दर्शन पर्याप्त है न ?

भागीरथी अम्मा : यह प्रसाद यमुना को देकर आऊँगी।

[जाती है।]

जनार्दन पिल्ला : बैठो, विजय ।

विजय : नहीं, खड़ा ही रहूँगा ।

जनार्दन पिल्ला : ओ......एक बात नहीं पूछी । मामा गये क्या ?

विजय : नहीं, घर में हैं ।

जनार्दन पिल्ला : नीलकण्ठ पिल्ला किस दिन कीरिक्काट जायेंगे ?

विजय : मुझसे कुछ भी नहीं कहा ।

जनार्दन पिल्ला : तो कल जरा इधर आकर मुझसे मिलने के लिए कहना ।

विजय : कहूँगा ।

जनार्दन पिल्ला : इधर आये थे ।

विजय : मालूम हुआ ।

जनार्दन पिल्ला : शुद्धात्मा है, अब उसका मन बहुत दुःखी होगा । उसको साँत्वना देकर लौटाना चाहिए । सीधे से कहना कि मुझसे मिलकर ही जावें ।

विजय : मेरे अविवेक को क्षमा कीजिए । मुझे कुछ कहना था ।

[जनार्दन पिल्ला उसे सुनने के लिए तैयार होकर मुख की ओर देखता है ।]

विजय : मुझे कहना है......वह कैसे कहूँ ?......सत्य कहने में भय है ।

जनार्दन पिल्ला : (खड़ा होकर सोचने लगता है) नीलकण्ठ पिल्ला की बात है क्या ?

विजय : हाँ ! यहाँ से वहाँ पहुँचने पर मामा चिन्ताकुल थे । एक बड़ा भारी प्रहार उनपर हुआ है । उनका मस्तिष्क विक्षिप्त हो गया है । उस सज्जन की सबसे बड़ी अभि-

लाषा है कि उसका लड़का परीक्षा में पास होकर किसी अच्छे ओहदे पर पहुँच जाय। उसके सभी संकल्प असफल हो गये।

जनार्दन पिल्ला : क्या करूँ। हाय, क्या !......

[अस्वस्थ होकर घूमने लगते हैं।]

विजय : भोजन नहीं किया। उसने किसी से बातचीत नहीं की। मामा निर्जीव से हो गये हैं। पास होने की आशा करने वाले पुत्र की दशा तो और भी अधिक दयनीय है।

जनार्दन पिल्ला : मेरी हालत भी ?

विजय : मैं उसके पास होने की वकालत करने नहीं आया हूँ। अपनी मजबूरी जताने के लिए आया हूँ। मैं इस कार्य को किसी न किसी प्रकार सिद्ध करने के लिए ही आया हूँ।

जनार्दन पिल्ला : अभी तक मैंने अपनी अन्तरात्मा को धोखा नहीं दिया है। इस समय तक जिस बोझीले घड़े को उसने वहन किया है, उसे वह अब नीचे पटक कर टुकड़े-टुकड़े नहीं कर सकता।

विजय : आप इस परीक्षा को आवश्यकता से अधिक पवित्र मानते हैं, इसीलिए आप ऐसा सोचते हैं।

जनार्दन पिल्ला : इस पवित्रता की कल्पना में कुछ गलती है क्या ? मैं भी इस परीक्षा में लिखकर पास हुआ हूँ। इस परीक्षा में सम्मिलित होने के लिए मैं हजारों लड़कों को पढ़ाता हूँ। मैं इसे पवित्र न मानूँ क्या ?

विजय : मेरी मूर्खता को क्षमा कीजिए। क्या आपको विश्वास है कि बच्चों की योग्यता, बुद्धि, विकास और सामर्थ्य का निर्णय करने के लिए यह परीक्षा पर्याप्त है ?

जनार्दन पिल्ला : नहीं।

विजय : इन परीक्षा-सम्प्रदायों में हजारों सीमाएँ हैं न ?

जनार्दन पिल्ला : हैं।

विजय : इसमें अस्त-व्यस्तता है न ?

जनार्दन पिल्ला : है।

विजय : योग्यतारहित मूर्ख बच्चे पास होते हैं न ?

जनार्दन पिल्ला : हाँ !

विजय : बुद्धिमान लड़के इसमें फेल हो जाते हैं।

जनार्दन पिल्ला : वह भी जानता हूँ।

विजय : कुछ लड़के प्रश्नपत्रों को चोर बाजारी से प्राप्त करके पास हो जाते हैं।

जनार्दन पिल्ला : देखा जाता है।

विजय : बाहर निकल कर उत्तर पुस्तिकाओं पर लिखकर पास होने वाले भी हैं।

जनार्दन पिल्ला : वैसा भी होता है।

विजय : रिश्वत देने पर अयोग्य लड़के को भी प्रथम श्रेणी या विशेष योग्यता के नम्बर देने वालों को भी मैं जानता हूँ।

जनार्दन पिल्ला : मैं भी जानता हूँ।

विजय : फिर भी आप इस व्यवस्था में इतनी अधिक आस्था क्यों रखते हैं ?

जनार्दन पिल्ला : शायद इस व्यवस्था में पवित्रता न हो, बेटे। परन्तु, मेरी अन्तरात्मा व्यभिचार नहीं करेगी। वह मेरी है।

विजय : वह परिस्थिति मेरी समझ में नहीं आती।

जनार्दन पिल्ला : इन विकारों ने तुम्हारी विवेक-शक्ति को आच्छादित कर लिया है, इसीलिए तुम्हारी समझ में नहीं आता। कितना समय व्यतीत होने पर भी परीक्षा की अच्छी व्यवस्था को कार्यरूप में परिणत करने की बात तुम क्यों नहीं सोचते ? जब तक परीक्षा की कोई नयी व्यवस्था नहीं हो जाती, तब तक इस सीमाबद्ध परीक्षा पद्धति का ही अनुसरण करना पड़ेगा। क्या तुम इन दोषों से रहित किसी परीक्षा-पद्धति को कार्यान्वित कर सकते हो ? उसे भी जाने दो। यदि कोई विवेकहीन व्यवहार करे तो क्या तुम कहते हो कि मैं अपने आदर्श और विश्वास को घूरे पर फेंक दूँ? क्या तुम अन्तरात्मा की खाल और मांसपेशियों को निर्दयता से नोचकर उनका लाल खून एक साँस में पी जाने को मुझसे कहते हो, मेरे बेटे !

विजय : मैं असमर्थ हूँ। मैं नहीं जानता......मेरा कथन गलत हो तो क्षमा कीजिए। मुझे अपने घर जाना है न ? मैं अपने मामा के जलने से सुन्न पड़े हुए दयनीय मुख को कैसे देख सकता हूँ ?

जनार्दन पिल्ला : (स्वयं शान्त होकर) बेटा, नीलकण्ठ पिल्ला की स्थिति मैं जानता हूँ। उस बेचारे के टूटे दिल के दर्द को भी मैं जानता हूँ। मैंने उसे देखा है न ?

विजय : (आवेश में) देखा है ? वह बेचारा जल रहा है, जानते हैं क्या ? तो भी आपको उनसे कोई सहानुभूति नहीं है।

जनार्दन पिल्ला : (तीव्र स्वर में) केवल नीलकण्ठ पिल्ला ही नहीं जल रहा है, असफल हुए सभी बच्चों के संरक्षक—अनेक नीलकण्ठ पिल्ले टूटे हुए दिलों से फूट-फूटकर रो रहे हैं। वह भी मैंने देखा है।

विजय : मैं नहीं जानता।

जनार्दन पिल्ला : (जोश के साथ) मैं वह जानता हूँ। उसको जानने से ही यह कष्ट है।

विजय : (जोर से) तब आप उस नीलकण्ठ को बालू के एक कण के समान देखते हैं। भारी भीड़ में एक मनुष्य ! (जोर से) यह नीलकण्ठ पिल्ला मेरा मामा है, इसे मत भूलिए।

जनार्दन पिल्ला : वही स्मृति मुझे शक्तिहीन बनाती है। मेरा मानसिक संतुलन नष्ट करती है। अन्यथा मुझे वेदना होगी क्या ? मुझ पर पड़े धर्मसंकट को तुम आज नहीं समझ रहे हो।

विजय : मैं इसको किसी न किसी प्रकार पूरा करने का प्रण करके आया हूँ। मेरे शब्दों को पूर्णरूपेण विश्वसनीय समझ कर वे अधीरता से उसकी प्रतीक्षा कर रहे हैं। मैं उनके सामने कौन-सा मुँह लेकर जाऊँ ?

जनार्दन पिल्ला : नीलकण्ठ पिल्ला मुझे जानते हैं। नीलकण्ठ पिल्ला के असफल हो जाने पर कोई दूसरा व्यक्ति सफल नहीं होगा, यह वह भी जानता है। इसीलिए साहस से जाकर कहो। एक नया अचम्भा न हो।

विजय : नौ नम्बर उस लड़के को दे देने पर वह पास हो जायेगा।

जनार्दन पिल्ला : आठ नम्बर और देने पर पास होने वाले भी हैं। सात नम्बर देने से, छः नम्बर देने से और केवल दो नम्बर देने से पास होने वाले भी हैं---इस समूह में।

विजय : वे अपने कष्ट का निवेदन करने के लिए आपके सामने नहीं हैं। याचना करने वाला मैं हूँ न ?

जनार्दन पिल्ला : असफल हुए सभी विद्यार्थियों को याचना करते हुए मैं अपनी बगल में व्यक्त रूप से देख रहा हूँ। वह देखकर मैं इन उत्तर पुस्तिकाओं का परिशोधन नहीं कर सकता। इसके जाँचने पर---सच कहने पर---मैंने किसी को नहीं देखा। मैंने अपनी अन्तरात्मा को ही साक्षी माना।

विजय : मुझे कुछ नहीं कहना है। मैं जाता हूँ।

[जाने के लिए तैयार होता है।]

जनार्दन पिल्ला : (जोर से) रुको !

[विजय ने मुख की ओर नहीं देखा। जाते समय पीछे की ओर मुड़कर खड़ा होता है।]

(शान्त होकर) विरोधी बनकर जाते हो क्या ?

विजय : (कुछ कहता नहीं)

जनार्दन पिल्ला : कुछ कहूँ। (अवरुद्ध कण्ठ से) बेटे मुझे गलत मत समझो।

विजय : (दृढ़ता से) मुझे भी ! (अचानक चला जाता है)

जनार्दन पिल्ला : (कुछ देर तक उसे जाते हुए देखकर खड़ा रहता है)
नहीं......नहीं......कुछ भी क्यों न हो (अस्वस्थ होकर टहलता है। अचानक एक स्थान पर खड़े होकर जोर से) यमुने ! (बुलाने के बाद इसे अनावश्यक समझ कर अस्वस्थ हो जाता है।)

यमुना : (प्रवेश करके) क्या, पिता जी ?

जनार्दन पिल्ला : हा ! कुछ नहीं।

यमुना : मुझे बुलाया है न ?

जनार्दन पिल्ला : मैं......नहीं......बेटी......

यमुना : पिता जी !......

जनार्दन पिल्ला : कुछ नहीं, बेटी ! अम्मा से यहाँ आने को कहो......हूँ......

[यमुना कुछ देर तक मुँह की ओर देखने के बाद चली जाती है। अपनी दृष्टि को किसी लक्ष्य विशेष पर केन्द्रित किये बिना जनार्दन पिल्ला वहाँ खड़ा रहता है। भागीरथी अम्मा वहाँ प्रवेश करती है। भय के साथ सामने जाकर]

भागीरथी अम्मा : क्या हुआ ?

जनार्दन पिल्ला : हें ?......हें ?......भागीरथी ! निस्सहाय हूँ......

भागीरथी अम्मा : बैठिए।

जनार्दन पिल्ला : अब कुछ नहीं। मेरी आँखों के आगे अंधकार छा जाने का अनुभव हुआ।......सभी कुछ आश्चर्यजनक... कुछ क्षणों तक बुद्धि के चकराने का अनुभव हुआ ?

भागीरथी अम्मा : पसीने से तर हैं आप। मैं पंखा झलती हूँ।

जनार्दन पिल्ला : नहीं। अभी कुछ नहीं, कहा न ? सब ठीक

होगा ।......अच्छा......(हँसने का प्रयास करता है) घूर-घूरकर क्यों देख रही हो? विश्वास हुआ न? एक बार और पान खाऊँ क्या?

भागीरथी अम्मा : इस समय पान मत खाओ। आज बहुत पान खाये हैं।

जनार्दन पिल्ला : मैंने पान खाये हैं या पानों ने मुझे खाया है।

भागीरथी अम्मा : दोनों ही गलत है। अन्दर चलें। कुछ समय लेटने पर कमजोरी दूर हो जायेगी।

जनार्दन पिल्ला : ठीक! तुम्हारे आदेश का पालन करूँगा।

[खड़ा होता है। भागीरथी अम्मा पास जाती है।]

मैं गिर जाऊँगा, तुम इसकी चिन्ता मत करो।

[परदा]

पाँचवाँ दृश्य

[स्थान—जनार्दन पिल्ला का भवन। नीलकण्ठ पिल्ला और भागीरथी अम्मा आपस में बात कर रहे हैं। दोनों के मुख म्लान हैं।]

नीलकण्ठ पिल्ला : साहब कब गये?

भागीरथी अम्मा : अधिक देर नहीं हुई। शायद पोस्ट आफिस तक गये हैं।

नीलकण्ठ पिल्ला : आने में देरी होगी।

भागीरथी अम्मा : नहीं। जल्दी ही आयेंगे। नहाने के लिए पानी गरम करने को कहकर गये हैं।......बैठिए।

नीलकण्ठ पिल्ला : नहीं, बैठूँगा नहीं। विजय से साहब ने कहा था कि कीरिक्काट जाने के पहले इधर आना है।

भागीरथी अम्मा : इसलिए ही मैंने बैठने को कहा ।

नीलकण्ठ पिल्ला : विजय ने कहा कि नहीं मिलना चाहिए ।

भागीरथी अम्मा : वह क्यों ?

नीलकण्ठ पिल्ला : वही तो मैंने भी पूछा। देखकर जाऊँ, ऐसे विचार से आया। लेकिन इधर पैर रखते ही दिल धड़कने लगा। उनका यहाँ न होना एक प्रकार से बहुत अच्छा रहा। परस्पर मिलना भी दोनों के लिए मुश्किल है। सच तो यह है कि कुछ भी उत्साह नहीं ।

भागीरथी अम्मा : भैय्या, अन्यथा मत सोचिए। उनका स्वभाव तो आप पहले से जानते हैं न ?

नीलकण्ठ पिल्ला : हाय ! मुझे साहब से कोई विरोध नहीं। मेरे भाग्य में जैसा लिखा है, वैसा ही भोग रहा हूँ न ? भोगने पर ही समाप्त होगी ।

भागीरथी अम्मा : भैय्या को मालूम है कि पहले उनको जब 'प्राइवेट' पाठशाला में काम था, तब मैनेजर ने कहा कि बच्चों को भर्ती करते समय धन माँगना है। इसी निर्बंध से वह काम छोड़ दिया ।

नीलकण्ठ पिल्ला : मुझे मालूम है कि अपनी अन्तरात्मा के विपरीत वे कुछ न करेंगे। इसीलिए मैंने कहा कि मुझे कोई नाराजगी नहीं। सत्य तो यह है कि मुझ पर अप्रत्याशित आघात हुआ। केवल नौ अंक और मिलें तो उसकी नाव किनारे पर लगे। क्या करूँ ? अब तक मेरी इन आँखों को प्रकाश नहीं मिला है, बहिन !

भागीरथी अम्मा : वह वेदना मुझे भी मालूम है, भैय्या ! उस बच्चे को पास होने के अंक न मिलने में……

नीलकण्ठ पिल्ला : कहो कि न देने में……

भागीरथी अम्मा : दे न सकने में……

नीलकण्ठ पिल्ला : आऽऽ……

भागीरथी अम्मा : उनकी मनोवेदना भैय्या नहीं जानते हैं क्या ?

नीलकण्ठ पिल्ला : बस वही मत कहो। अन्तरात्मा के अनुसार काम करने वालों की आँखों में खून नहीं होता, यह मैं जानता हूँ।

भागीरथी अम्मा : हाय ! उसी प्रकार सोचा क्या ? उस दिन रात को वे नहीं सोये, जिस दिन भैय्या को नम्बर बताये। सबेरे तक इधर-उधर टहलते हुए समय बिताया। मैंने बात पूछी, तब फूट-फूट कर रोते हुए कहा कि "नीलकण्ठ पिल्ला के लिए मैं कुछ नहीं कर सका ?" मुझे वैसा नहीं कहना था।

नीलकण्ठ पिल्ला : (मृदुल स्वर में) यह सच है क्या ?

भागीरथी अम्मा : मैं झूठ बोल रही हूँ क्या ? 'आँखों में खून नहीं' ऐसा कहने पर ही मैंने बताया। उस दिन चाय के साथ मेरे आने तक भैय्या उठकर चले गये। आम का फल जो आप लाये थे, उसके भी टुकड़े करके मैं लायी थी। मैंने वह उनके सामने रखा। आम उनको बहुत पसंद है। किन्तु एक टुकड़ा ओठों के पास तक पहुँचाकर फिर प्लेट में रख दिया। 'नीलकण्ठ पिल्ला यह चाय पिये बिना ही चले गये, तो फिर मैं यह आम कैसे खाऊँ ?'—ऐसा उन्होंने कहा।

नीलकण्ठ पिल्ला : (प्रत्यक्षतः विकार विवश होकर) अपनी वेदना से मैंने कुछ कहा। मन में पीड़ा पैदा होने पर जीभ पर लगाम नहीं लगायी जा सकती। मुझे मालूम है कि वे मुझे प्यार करते हैं। मैं भी कभी घृणा नहीं करूँगा।

भागीरथी अम्मा : मेरी बड़ी बेटी एक तहसीलदार की पत्नी है। किसी से एक बड़ी रकम रिश्वत में ले ली। किसी न किसी प्रकार उसके बेटे को पास करने के लिए तहसीलदार ने कई बार इधर आकर बहुतेरी कोशिश की। उन्होंने उनसे यह तक नहीं कहा कि कितने नम्बर दिये हैं। उनके विरोध में उनको दुःख भी नहीं। परन्तु, भैय्या को निराश लौटा देने से उनके दिल में दर्द है। उनका मन जल रहा है। वे सामने कुछ कहें तो थोड़ी सी सांत्वना मिलेगी, यही सोचकर उन्होंने भैय्या को देखने के लिए बुलवाया।

नीलकण्ठ पिल्ला : वे कितने महान् व्यक्ति हैं। मैं कौन हूँ? मेरी कीमत बालू के कण से अधिक है क्या? नहीं, नहीं……मैं वह नहीं सह सकता। माफ कीजिए। मुझमें उनके सामने खड़े होने की मनःशक्ति नहीं है।

भागीरथी अम्मा : मैंने एक बात नहीं पूछी। विजय ने वहाँ जाकर क्या कहा?

नीलकण्ठ पिल्ला : उस लड़के को बड़ी मानसिक वेदना है। सच कहें तो उस लड़के को मुझसे अधिक वेदना है।

भागीरथी अम्मा : वह मैं समझ सकती हूँ।

नीलकण्ठ पिल्ला : जवान है न? भावी पत्नी के पिता उसके कहने

पर नौ नम्बर ज्यादा देने को तैयार न हुए तो उसको वेदना नहीं होगी क्या ?

भागीरथी अम्मा : वह स्वाभाविक है। परन्तु, उस कारण से……

नीलकण्ठ पिल्ला : हें ?…

भागीरथी अम्मा : इस छोटे से कारण से वह अब शादी नहीं करेगा क्या ?

नीलकण्ठ पिल्ला : (कुछ क्षण सोच-विचार में बैठते हैं) वैसा कुछ कहा क्या ?

भागीरथी अम्मा : उनसे रूठकर ही गया।

नीलकण्ठ पिल्ला : क्या कहा ?

भागीरथी अम्मा : कुछ भी हो ! मुझे कुछ भय है ।

नीलकण्ठ पिल्ला : वैसा करेगा क्या ?

भागीरथी अम्मा : सभी लोग समझते हैं कि विवाह निश्चित हो गया । यमुना के लिए तो वह प्राणों से प्यारा है…… फिर यदि यह न हुआ तो—

नीलकण्ठ पिल्ला : (सोच-विचार कर) ठीक है । उसके कथन का वास्तविक अर्थ अभी समझ में आया । उसने कहा कि दुष्ट आदमी को घर से बाहर निकाल देना चाहिए । मैंने सोचा कि मेरे बेटे को लक्ष्य करके कहा है ।

भागीरथी अम्मा : मेरी बेटी जल रही है । वह परित्याग कर देगा तो उसे पूरा जीवन विरहाग्नि में जलकर बिताना पड़ेगा ।

नीलकण्ठ पिल्ला : मैं कुछ भी सुन नहीं सकता । सिर फटा जा रहा है ।

भागीरथी अम्मा : उसने क्या गलती की ? उसको आग में धकेलें तो ईश्वर सह सकेगा ?......बड़ी जाति के लोग हैं न ? ......ज्ञानी लोग भी इस प्रकार के अनुचित कार्य करने लगें तो......

नीलकण्ठ पिल्ला : मुझे मालूम नहीं......उसको क्या हुआ ? मैं जाता हूँ......सब कहीं अंधकार है। साहब से कहना कि मैं आया था। मुझे कोई दुःख नहीं—यह भी कहना...

भागीरथी अम्मा : भाई ठहरिए। मेरी बात सुनिए। मेरी एक प्रार्थना है।

नीलकण्ठपिल्ला : नहीं......नहीं......सब मेरे......कारण......मैं सोच भी नहीं सकता। इससे अधिक और क्या होना है ? मैं चला......

[जल्दी-जल्दी जाते हैं।]

[भागीरथी अम्मा अस्वस्थ होकर चिन्ता में डूबी हुई कुछ क़दम चलती है। एक ओर से यमुना आती है। उसकी आँखें रोते-रोते सूज गयी हैं।]

यमुना : अम्मा !

[भागीरथी अम्मा वह पुकार सुनकर रुक जाती है। जो कहती है, उसे सुनने की तैयारी में खड़ी होती हैं परन्तु उसके मुख की ओर नहीं देखती।]

यमुना : (कुछ क्षण के बाद) अम्मा !

[उसका भी उत्तर नहीं मिला। हिलती-डुलती नहीं। मुख देखने पर मालूम पड़ता है कि उनके मन में कुछ हलचल है।]

यमुना : अम्मा ! क्या सोच रही हैं ?

भागीरथी अम्मा : तुम्हारे विषय में ही सोच रही हूँ।

यमुना : मेरे विषय में क्या सोच रही हैं ? मैंने कल रात को सब

कुछ स्पष्ट कहा न ? कभी-कभी हिसाब करके रकम छोड़ते हैं न ? वैसे ही मुझे भी समझिए, माँ।

भागीरथी अम्मा : वैसा मत कहो, बेटी ! फिर भी······फिर भी मेरी यमुने !······पिताजी यह जानने पर कैसे सहेंगे ? आज तक यह घर आश्रम की तरह था न······

यमुना : (जोर) माँ, शव पर कुठार मत मारो। अपनी गलती पर मैं ही अपना सारा शरीर वेदना की ज्वाला में जला रही हूँ। मुझे कुछ भी याद मत दिलाओ। मैं टूक-टूक होकर नीचे गिर जाऊँगी।

भागीरथी अम्मा : बेटी, तुम्हें दुःखी करने के लिए नहीं कहा। मेरी वेदना कुचल डालने पर भी समाप्त नहीं होती है।······कल मैंने क्या समझा ? मैं एक माँ हूँ न ?

यमुना : सब कुछ सुनने पर भी माँ मुझे मार-पीटकर दूर फेंकने का प्रयास क्यों नहीं करतीं ?······मैं जिस योग्य हूँ, वह मुझे मिलना चाहिए न ?

भागीरथी अम्मा : बेटी ! मैंने वह नहीं सीखा। मैं तेरे पिता के साथ बहुत वर्षों तक रही हूँ न ?

यमुना : मेरी एक प्रार्थना है। माँ उसके लिए अनुमति देंगी क्या ?

भागीरथी अम्मा : क्या है, बेटी ?

यमुना : मुझे जाने की अनुमति दीजिए।

भागीरथी अम्मा : कहाँ ?

यमुना : कहीं नहीं। मुझे बहुत दूर चले जाने की अनुमति दीजिए ······मुझे······मुझे किसी अपरिचित जगह पर जाकर जीवन बिताना है। इससे मत डरो कि मैं आत्महत्या करूँगी।

भागीरथी अम्मा : मूर्खता भरी बातें मत करो।

यमुना : आप सबके मुँह देखते हुए मैं कैसे अपने दिन बिताऊँगी ? आप लोगों को यह सोच लेने में क्या कठिनाई है कि मुझसे कोई विवाह करके मुझे दूर ले गया ? यदि मुझसे कुछ भी प्रेम और करुणा है तो मुझे जाने दीजिए। मेरी माँ हो न ?

भागीरथी अम्मा : हृदय में चुभने वाली बातें मत कह ! उस तरह की निराशा के लिए सभी दरवाजे बन्द हैं, ऐसा मत सोच। ईश्वर है न ?

यमुना : ईश्वर······ईश्वर······(एक ओर देखकर) मां, मेरे ईश्वर आ रहे हैं।

भागीरथी अम्मा : पिता आ गये क्या ?

यमुना : हाँ···पवित्रात्मा······(जनार्दन पिल्ला प्रवेश करते हैं। हाथ में मोमबत्ती, दियासलाई, सील करने की लाख आदि लिए हैं।)

जनार्दन पिल्ला : क्या, माँ और बेटी एक साथ—भागीरथी, मुझे जल्दी नहाना है। पानी गरम हुआ क्या ?

भागीरथी अम्मा : मैं देखकर आती हूँ। (कुछ कदम चलने के बाद पीछे मुड़कर) नीलकण्ठ पिल्ला आये थे।

जनार्दन पिल्ला : मेरे पीछे ? कोरिक्काट गये क्या ?

भागीरथी अम्मा : कुछ निश्चित नहीं कहा।

जनार्दन पिल्ला : नहाने के बाद मैं मिलने जाऊँगा।

(भागीरथी अम्मा अन्दर जाती हैं।)

बेटी ! यह मोमबत्ती और सीलिंग बाक्स किसलिए है, जानती हो क्या ? वे बण्डल सील करने हैं। डाक घर

वालों ने कहा कि दो बजे के पहले ले आयँ तो रजिस्ट्री हो सकती है।

(यमुना कापियों का बण्डल उठाने लगती।)

नहीं। तू उठा नहीं सकती। सोचने से अधिक भारी है। तू वह मोमबत्ती जला दे। (कापियाँ बाहर निकाल कर मजबूत डोरे से दो बण्डलों में अच्छी तरह बाँधकर मेज के नीचे से उठाकर मेज के ऊपर रखते हैं।) किसी के जाने बिना मैंने अच्छी तरह से बाँध दिया। (हँसकर) परन्तु तुम हमारे जान लेने के बाद ही बाँधना।

यमुना : हैं। (हाथ में जलने वाली मोमबत्ती गिर पड़ती है।)

जनार्दन पिल्ला : लड़की, वह आग है। उसके साथ खेलना अच्छा नहीं।

(यमुना मेज के एक ओर झुककर बैठती हुई दुबारा उसे जलाती है। उसके आँसू पोंछने को जनार्दन पिल्ला देख नहीं पाते।)

इस पर सील लगाकर डाकघर से भेज देने पर ही शान्ति मिलेगी। उसके बाद ही ठीक से साँस ले······ मोमबत्ती कहाँ हैं, बेटी ? तुम्हें क्या हुआ ?

यमुना : कुछ नहीं, पिताजी !

जनार्दन पिल्ला : मेज के एक किनारे पर वह मोमबत्ती रख दे। यह लड़की तो कुछ भी नहीं जानती। तुम्हारे दफ्तर में पत्र रजिस्टर्ड करते समय सील लगायी जाती है न ? यह है सीलिंग बाक्स। हाथ को जलने से बचाना चाहिए। (एक बण्डल में लाख लगाने में दत्तचित्त है। वह काम करते समय भी बातचीत करता जाता है।)······यह

अन्तिम सील लगानी है। फिर यह काम नहीं कर सकता। इससे मिलने वाला धन और महिमा छोड़ता हूँ। इससे केवल यही फायदा हैं कि दुनिया के विरोध का पात्र बनें। अब बहुत दुश्मन बना लिए। बन्धु-बान्धव नाराज हो गये। मेरी बेटी भी रूठ गयी। (तुरन्त यमुना पर ध्यान करके) तेरा हाथ क्यों काँपता है। नहीं। उसे वहीं छोड़ दे। तेरी तन्दुरुस्ती अच्छी नहीं है। मुझे उसका ध्यान रखना था। अन्दर जाकर लेटो। यह केवल मेरे ही करने योग्य है। (कंधा थाम-कर दरवाजे तक ले जाते हैं।) कुछ भी साफ-साफ नहीं कहेगी। मैं कैसे समझ सकूँ। आओ।
(जनार्दन पिल्ला दुबारा मेज के पास आकर क्षण भर सोचते रहते हैं। फिर काम में लग जाते हैं।) बेचारी बेटी, क्या करे ?

भागीरथी अम्मा : (प्रवेश करके) पानी गरम हो गया।
जनार्दन पिल्ला : आता हूँ।
भागीरथी अम्मा : यमुना गयी क्या ?
जनार्दन पिल्ला : उसकी तबियत ठीक नहीं।
भागीरथी अम्मा : (पास जाकर) कापियों पर सील करते हैं क्या ?
जनार्दन पिल्ला : (मुख की ओर देखे बिना) हाँ ! आज इसे भेजना है।
भागीरथी अम्मा : जरा ठहरो।
जनार्दन पिल्ला : (मुख की ओर देखकर) क्या ?
भागीरथी अम्मा : उस बण्डल में से एक कापी निकालनी है।

जनार्दन पिल्ला : क्यों ?

भागीरथी अम्मा : भैय्या नीलकण्ठ पिल्ला के बेटे को नौ अंक की कमी है।

जनार्दन पिल्ला : वह ? उसके लिए कितनी बार कह चुका।

भागीरथी अम्मा : अब यमुना की माँ कहती है।

जनार्दन पिल्ला : (आश्चर्य से) भागीरथी !

भागीरथी : हाँ ! आपकी भागीरथी ही कहती है। वह कापी निकालो। उसके नम्बर ठीक करने हैं।

जनार्दन पिल्ला : नम्बर ठीक करने हैं ? मैं ? उतना हठ है तो इस मोमबत्ती से इसको भस्मसात कर दूंगा।

भागीरथी अम्मा : उसके बदले वह ठीक नहीं करेंगे क्या ?

जनार्दन पिल्ला : मुझसे इतना अधिक परिचित होने पर भी सन्देह है क्या ? पिछले तीन वर्षों से मेरे बिपरीत एक़ शब्द भी न कहने वाली तुझे आज इतना साहस कैसे हुआ ? यदि मैं वैसा आदमी होता तो आज तक तू दुमंजिले की रानी बन गयी होती। केवल यही है मेरी सम्पत्ति। उसको तू चूर-चूर कर देने के लिए कह रही है क्या ?

भागीरथी अम्मा : मुझसे यह सब कहना है क्या ? और कोई उपाय होता तो मैं यह कहती ही क्यों ? आज तक ऐसा कहा है क्या ? अपनी बेटी की दशा को देखते हुए मजबूर होकर यह कहना पड़ा।

जनार्दन पिल्ला : विजय का कार्य है क्या ?

भागीरथी अम्मा : हाँ ! यदि वह उससे शादी न करे तो ?

जनार्दन पिल्ला : यह नौ अंक अधिक न देने पर उसका स्नेह मिट जायेगा क्या ?

भागीरथी अम्मा : उनकी स्थिति ऐसी है कि उसके स्नेह से ९ नम्बर अधिक कर नहीं सकता। उसकी स्थिति ? लड़की भस्मसात हो रही है।

जनार्दन पिल्ला : वह मुझे मालूम है। उसके स्नेह की अगाधता और विशालता मैं जानता हूँ। परन्तु……मैं क्या करूँ ?

(कुछ देर तक 'सील' किये बण्डल पर दृष्टि डालते हैं।)

भागीरथी अम्मा : भगवान इसे क्षमा करेंगे।

जनार्दन पिल्ला : (दृढ़ स्वर में) नहीं नहीं, भागीरथी, मैं नहीं करूँगा ! वैसा करना पड़ेगा तो भगवान की कृपा से उसके लिए दूसरा पति मिल जायगा।

भागीरथी अम्मा : क्या आप कह रहे हैं कि मुझे यह बण्डल नहीं तोड़ना है ?

जनार्दन पिल्ला : नहीं ! यदि मैं एक कापी में कुछ अंक बढ़ाऊँ तो अन्य असफल लड़के आकर मुझे तंग करके पागल बना देंगे।

भागीरथी अम्मा : बेटी को कुछ भी हो जाय, परवाह नहीं। है न ?

जनार्दन पिल्ला : उसको ज्ञान है। मैं आश्वासन दूँगा।

भागीरथी अम्मा : कहे बिना रहने की मैंने बहुतेरी कोशिश की। क्या करूँ। आप घबराइए मत। चाहे विजय उससे शादी करें या न करें, ठीक है………

जनार्दन पिल्ला : भागीरथी !

भागीरथी : आठ महीनों के बाद इस घर में एक बच्चे का रोदन सुनायी पड़ेगा।

जनार्दन पिल्ला : (घबराते हुए धीमे स्वर में) भार्गारथी !

[स्तम्भित हो जाते हैं ।]

भागीरथी अम्मा : बचने के लिए यही एक उपाय है ।

जनार्दन पिल्ला : बेचारी !

भागीरथी अम्मा : क्या करूँ ?

जनार्दन पिल्ला : उसने इसीलिए नम्बर बदल दिये। कितना अच्छा हुआ कि मैंने उसे क्षमा कर दिया ।

भागीरथी अम्मा : कार्य गौरव को समझ गये न ? अब सोच-विचार करने की कोई बात नहीं । इसीलिए मैंने कहा कि यह भूल ईश्वर क्षमा गरेंगे ।

[यमुना द्वार पर दीख पड़ती है ।]

यमुना : क्षमा नहीं करेंगे । माँ ! मेरे खातिर पिता की अन्तरात्मा को रणक्षेत्र मत बनाइए । मेरे अपराध के लिए पिता जी को यह नहीं करना है ।

जनार्दन पिल्ला : बेटी !

भागीरथी अम्मा : तू तो यही कहेगी । (रोती है)

यमुना : पिताजी ! मुझमें झमा माँगने की भी योग्यता नहीं। अगर माँ-बाप को अनुमति मिलेगी, तो मैं इस घर के एक कोने में रहूँगी ।

जनार्दन पिल्ला : बेटी !……मेरी बेटी !……तू ऐसा मत कह । क्या तूने सोचा कि मैं तुझे गाली देकर कोसूँगा ? अपने पिता को तू जानती नहीं क्या ?

यमुना : पिता जी ने जो स्वतंत्रता दी, उसी का परिणाम है यह……मैंने विश्वास किया……

जनार्दन पिल्ला : कोई बात नहीं, बेटी ! मैं विजय से मिलूँगा।

भागीरथी अम्मा : वह आया है।

जनार्दन पिल्ला : कहाँ है ?

भागीरथी अम्मा : भैय्या, नीलकण्ठ पिल्ला और उसका बेटा भी है।

जनार्दन पिल्ला : मालूम नहीं यह किसका श्रीगणेश है। हम बरामदे में चलें।

[**जनार्दन पिल्ला और भागीरथी अम्मा जाते हैं। यमुना फिर 'सीलिंग बॉक्स' लेकर मोहर लगाने लगती है। उसके मुख पर चिन्ता की गहरी रेखाएँ दीख पड़ती हैं। विजय प्रवेश करता है।**]

विजय : (आर्द्रता से) यमुने……!

(वह सिर नीचा किये खड़ी है)

इधर देखो……यमुने !……मैंने न मालूम क्या-क्या कहा……उस समय मुझे सुध-बुध नहीं थी……यमुने, जरा मेरी ओर देखो ……मैंने……मैंने तुम्हें दुःखी किया क्या?……

यमुना : लड़की हूँ न ?……इसे कैसे भी कुचल सकते हैं न ? नयी है तो कपड़े की तरह पहनते हैं। पुरानी होने पर कोने में फेंक देते हैं। फट जाने पर जमीन पोंछने के काम में लाते हैं। पूछने वाला है ही कौन ?

विजय : मेरी यमुना……वैसा मत कहो।

यमुना : लो, वे कापियाँ रखी हैं और यह रंगीन पेंसिल भी। गाँठ मैं तोड़ती हूँ। नम्बर बढ़ाने हैं क्या ?

विजय : नहीं।

यमुना : भैय्या, आपके ऊपर विश्वास करके ही मैंने अपना मन, हृदय, मान और जीवन आपके चरणों पर अर्पित कर दिया है न ?

विजय : (पास आकर) हाय......तुझे पीड़ित करूँ तो भगवान भी क्षमा नहीं करेगा। जो बीत गया, उसे भूल जाओ। कहो......तूने मुझे क्षमा किया......तभी मुझे सन्तोष मिलेगा। नहीं तो......

यमुना : (रोती हुई) भैय्या !

विजय : रोओ मत......

यमुना : आगे आँसू नहीं निकलेंगें। इतने अधिक आँसू बहा चुकी हूँ।

विजय : मेरी प्रियतमा हो न......आँसू पोंछो। वे सब आ रहे हैं।

[यमुना धीरे से हटती है। नीलकण्ठ पिल्ला, जनार्दन पिल्ला, भागीरथी अम्मा और अप्पू का प्रवेश।]

नीलकण्ठ पिल्ला : बेटा विजय ! इन चरणों पर नतमस्तक होकर तुम माफी माँगो, तभी मेरे मन को शान्ति मिलेगी। हम तो इतने छोटे हैं। अच्छे मनुष्यों को—सच्चे मानवों को भी जीने देना चाहिए।

जनार्दन पिल्ला : नीलकण्ठ पिल्ला !

नीलकण्ठ पिल्ला : नहीं बेटे ! इसमें संकोच मत करो। ये इतने पुनीत चरण आँखों में रखने योग्य हैं। ऐसी महान् विभूति को इस पृथ्वी पर मैं पहली बार देख रहा हूँ।

[विजय जनार्दन पिल्ला के मुख की ओर देखता है। समीप जाता है। वे अवरुद्ध कण्ठ से उसे रोक लेते हैं।]

जनार्दन पिल्ला : नहीं ! यह अनुमति मैं नहीं दूँगा। तू बच्चा है।

[आलिंगन करते हैं।]

विजय : (रोता हुआ) मुझे माफी दीजिए।

जनार्दन पिल्ला : (अप्पू की ओर देखकर) बेटे, तू बता, तुझे अपने मामा से नम्बर बढ़वा कर पास होना है क्या ?

अप्पू : नहीं मामा ! मैं पढ़कर पास हूँगा।

जनार्दन पिल्ला : अप्पू को इधर पढ़ने दो। मैं उसको एक ओहदे तक पहुँचाऊँगा। मेरे लिए वह और यमुना एक जैसे हैं।

नीलकण्ठ पिल्ला : भगवान अनुग्रह करे। और क्या कहूँ। आज मैं कीरिक्काट जाऊँगा।

जनार्दन पिल्ला : वहाँ जाकर माता जी से कहो कि मैं उनसे मिलने के लिए आ रहा हूँ।

नीलकण्ठ पिल्ला : विवाह के लिए निमंत्रण देने को ?

जनार्दन पिल्ला : हाँ……

नीलकण्ठ पिल्ला : बहुत से अच्छे पके आम तोड़कर रखूँगा।

[हंसने की कोशिश करते हैं]

[परदा]

[समाप्त]